IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय रागों पर एक परियोजना

MRS. RAJNI KORI

STUDENT

SANJEEV AGRAWAL GLOBAL EDUCATIONAL (SAGE) UNIVERSITY, BHOPAL (M.P)

राग क्या है ?

भारतीय शास्त्रीय संगीत विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संगीत प्रणालियों में से एक है। इसकी आत्मा "राग" है, जो स्वरों की एक ऐसी मनमोहक और व्यवस्थित संरचना है, जो मनुष्य के मन में विभिन्न भावों और अनुभूतियों को जगाती है। राग केवल कुछ स्वरों का समूह नहीं, बल्कि यह नियमों में बंधी एक मधुर इकाई है, जिसे सुनकर श्रोता एक अलग ही संसार में खो जाता है। यह परियोजना भारतीय रागों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालेगी, उनके इतिहास, संरचना और महत्व को समझने का प्रयास करेगी।

राग का अर्थ और परिभाषा

"राग" शब्द संस्कृत के "रञ्ज्" धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'मन को प्रसन्न करना' या 'रंगना'। संगीत में राग स्वरों का एक ऐसा संयोजन है जो मधुर और रंजक हो तथा श्रोताओं के मन को आनंदित कर सके। प्रत्येक राग की अपनी एक विशिष्ट पहचान होती है, जिसमें कुछ स्वर प्रमुख होते हैं और कुछ वर्जित। यह एक निश्चित भाव एको व्यक्त करता है।

भारतीय संगीत में राग की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है: "स्वर-वर्ण-विशेषण ध्वनिभेदेन वा पुनः। यत्र श्रोतुर्मनोरंजनं स रागः परिकीर्तितः॥" अर्थात्, स्वरों के विशेष वर्ण (आरोह-अवरोह, वादी-संवादी आदि) और ध्वनि के भेद से जो श्रोता के मन को प्रसन्न करे, वही राग कहलाता है।

हर राग का अपना एक रूप, एक व्यक्तित्व होता है जो उसमें लगने वाले स्वरों और लय पर निर्भर करता है। किसी राग की जाति इस बात से निर्धारित होती हैं कि उसमें कितने स्वर हैं। आरोह का अर्थ है चढना और अवरोह का उतरना। संगीत में स्वरों को क्रम उनकी ऊँचाई-निचाई के आधार पर तय किया गया है।

'सा' से ऊँची ध्वनि 'रे' की, 'रे' से ऊँची ध्वनि 'ग' की, ग' से ऊँची ध्वनि 'म' की, 'म' से ऊँची ध्वनि 'प' की, प' से ऊँची ध्वनि 'ध' की, और 'ध' से ऊँची ध्वनि 'नि' की होती है। जिस तरह हम एक के बाद एक

सीढ़ियाँ चढ़ते हुए किसी मकान की ऊपरी मंजिल तक पहुँचते हैं उसी तरह गायक सा-रे-ग-म-प-ध-नि-सां का सफर तय करते हैं। इसी को आरोह कहते हैं। इसके विपरीत ऊपर से नीचे आने को अवरोह कहते हैं। तब स्वरों का क्रम ऊँची ध्वनि से नीची ध्वनि की ओर होता है जैसे सां-नि-ध-प-म-ग-रे-सा। आरोह-अवरोह में सातों स्वर होने पर राग 'सम्पूर्ण जाति' का कहलाता है। पाँच स्वर लगने पर राग 'औडव' और छह स्वर लगने पर 'षाडव' राग कहलाता है। यदि आरोह में सात और अवरोह में पाँच स्वर हैं तो राग 'सम्पूर्ण औडव' कहलाएगा। इस तरह कुल 9 जातियाँ तैयार हो सकती हैं जिन्हें राग की उपजातियाँ भी कहते हैं। साधारण गणित के हिसाब से देखें तो एक 'थाट' के सात स्वरों में 484 राग तैयार हो सकते हैं। लेकिन कुल मिलाकर कोई ड़ेढ सौ राग ही प्रचलित हैं। मामला बहुत पेचीदा लगता है लेकिन यह केवल साधारण गणित की बात है। आरोह में 7 और अवरोह में भी 7 स्वर होने पर 'सम्पूर्ण-सम्पूर्ण जाति' बनती है जिससे केवल एक ही राग बन सकता है। वहीं आरोह में 7 और अवरोग में 6 स्वर होने पर 'सम्पूर्ण षाडव जाति' बनती है।

कम से कम पाँच और अधिक से अधिक ७ स्वरों से मिल कर राग बनता है। राग को गाया बजाया जाता है और ये कर्णप्रिय होता है। किसी राग विशेष को विभिन्न तरह से गा-बजा कर उसके लक्षण दिखाये जाते है, जैसे आलाप कर के या कोई बंदिश या गीत उस राग विशेष के स्वरों के अनुशासन में रहकर गा के आदि।

रागों का उद्भव और इतिहास

भारतीय संगीत की जड़ें वेदों में मिलती हैं, विशेषकर सामवेद में, जहाँ मंत्रों का गायन विशेष स्वर-पद्धति से किया जाता था। धीरे-धीरे, ये स्वर-पद्धतियाँ_विकसित होकर 'जातियों' और फिर 'ग्राम-मूर्छना' प्रणाली में परिवर्तित हुईं। बाद में, इन प्रणालियों से ही 'राग' की अवधारणा का जन्म हुआ।

मध्यकाल में, भरत मुनि का 'नाट्यशास्त्र' और शारंगदेव का 'संगीत रत्नाकर' रागों के विकास और वर्गीकरण के महत्वपूर्ण ग्रंथ रहे। इन ग्रंथों ने रागों के सिद्धांतों और उनके प्रयोगों को विस्तार से समझाया। मुग़ल काल में, भारतीय शास्त्रीय संगीत को राज्याश्रय मिला और इसमें कई नए रागों का समावेश हुआ तथा हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत शैलियों का विकास हुआ।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रमुख शैलियाँ

भारतीय शास्त्रीय संगीत को मुख्य रूप से दो प्रमुख शैलियों में बांटा गया है:

1. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत: यह उत्तरी भारत में प्रचलित है। इसमें रागों का विकास थाट प्रणाली पर आधारित है। इसमें ख्याल, ध्रुपद, ठुमरी, तराना जैसी गायन शैलियाँ प्रमुख हैं।
2. कर्नाटक शास्त्रीय संगीत: यह दक्षिणी भारत में प्रचलित है। इसमें रागों का विकास 'मेलकर्ता' प्रणाली पर आधारित है। इसमें वर्णम, कृति, पदम् जैसी गायन शैलियाँ प्रमुख हैं।

हालांकि, दोनों शैलियों में रागों का आधार समान है, लेकिन उनकी प्रस्तुति, नामों और कुछ नियमों में अंतर हो सकता है।

राग की संरचनात्मक विशेषताएँ (राग के अंग)

प्रत्येक राग कुछ विशिष्ट नियमों और तत्वों से मिलकर बनता है, जो उसे एक अनूठी पहचान प्रदान करते हैं:

1. स्वर: राग में उपयोग होने वाले मूल ध्वनियाँ। ये सात शुद्ध स्वर (सा, रे, ग, म, प, ध, नि) और उनके विकृत रूप (कोमल रे, कोमल ग, तीव्र म, कोमल ध, कोमल नि) होते हैं। एक राग में कम से कम पाँच और अधिकतम सात स्वर होते हैं।
2. थाट (थाट/मेल): रागों को वर्गीकृत करने के लिए उपयोग की जाने वाली एक प्रणाली। हिंदुस्तानी संगीत में पंडित विष्णु नारायण भातखंडे ने 10 थाटों की रचना की (जैसे बिलावल, कल्याण, खमाज, भैरव, पूर्वी, मारवा, काफी, आसावरी, तोड़ी, भैरवी), जिनसे विभिन्न राग उत्पन्न होते हैं।
3. आरोह: स्वरों का नीचे से ऊपर की ओर क्रमबद्ध चलन (जैसे सा रे ग म प ध नि सां)।
4. अवरोह: स्वरों का ऊपर से नीचे की ओर क्रमबद्ध चलन (जैसे सां नि ध प म ग रे सा)।
5. पकड़: राग की एक छोटी सी स्वर-संगति जो उस राग की पहचान कराती है। यह राग का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है।
6. वादी स्वर: राग का सबसे महत्वपूर्ण और प्रमुख स्वर, जिस पर राग में बार-बार ठहराव होता है। इसे 'अंश स्वर' या 'जीवन स्वर' भी कहते हैं।
7. संवादी स्वर: वादी स्वर के बाद राग का दूसरा महत्वपूर्ण स्वर। यह वादी का सहायक होता है और वादी के साथ मिलकर राग की मधुरता बढ़ाता है। यह वादी से 4 या 5 स्वर की दूरी पर होता है।

8. वर्जित स्वर: राग में जिन स्वरों का प्रयोग नहीं किया जाता, वे वर्जित स्वर कहलाते हैं।

9. जाति: राग में प्रयोग होने वाले स्वरों की संख्या के आधार पर उसकी जाति निर्धारित होती है। मुख्य तीन जातियाँ हैं:

   - औडव: 5 स्वर (जैसे राग भूपाल)
   - षाड़व: 6 स्वर (जैसे राग मारवा)
   - सम्पूर्ण: 7 स्वर (जैसे राग यमन) ये जातियाँ आरोह और अवरोह में अलग-अलग हो सकती हैं (जैसे औडव-सम्पूर्ण, षाड़व-औडव आदि)।

10. समय: प्रत्येक राग का अपना एक निश्चित गायन या वादन का समय होता है, जिसे 'समय चक्र' कहते हैं। यह दिन और रात के विभिन्न प्रहरों से जुड़ा होता है (जैसे सुबह के राग, शाम के राग, रात के राग)।

11. रस: प्रत्येक राग एक विशेष रस (भाव) को व्यक्त करता है, जैसे शांत, वीर, श्रृंगार, करुण आदि।

रागों का महत्व

राग भारतीय संस्कृति और जनजीवन में गहरे समाए हुए हैं:

- भावात्मक अभिव्यक्ति: राग भावनाओं, अनुभूतियों और मनोदशाओं को व्यक्त करने का एक शक्तिशाली माध्यम हैं।
- आध्यात्मिक संबंध: कई रागों का संबंध ध्यान और आध्यात्मिकता से है। इन्हें ईश्वर से जुड़ने का माध्यम माना जाता है।
- वैज्ञानिक आधार: रागों का मानव शरीर और मन पर गहरा प्रभाव होता है। कुछ राग चिकित्सीय गुणों के लिए भी जाने जाते हैं (राग चिकित्सा)।
- कलात्मक सुंदरता: राग संगीतकारों को अपनी रचनात्मकता और कलात्मकता दिखाने का अवसर प्रदान करते हैं।
- सांस्कृतिक विरासत: राग भारतीय सभ्यता की एक अमूल्य सांस्कृतिक विरासत हैं, जिन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया जाता है।

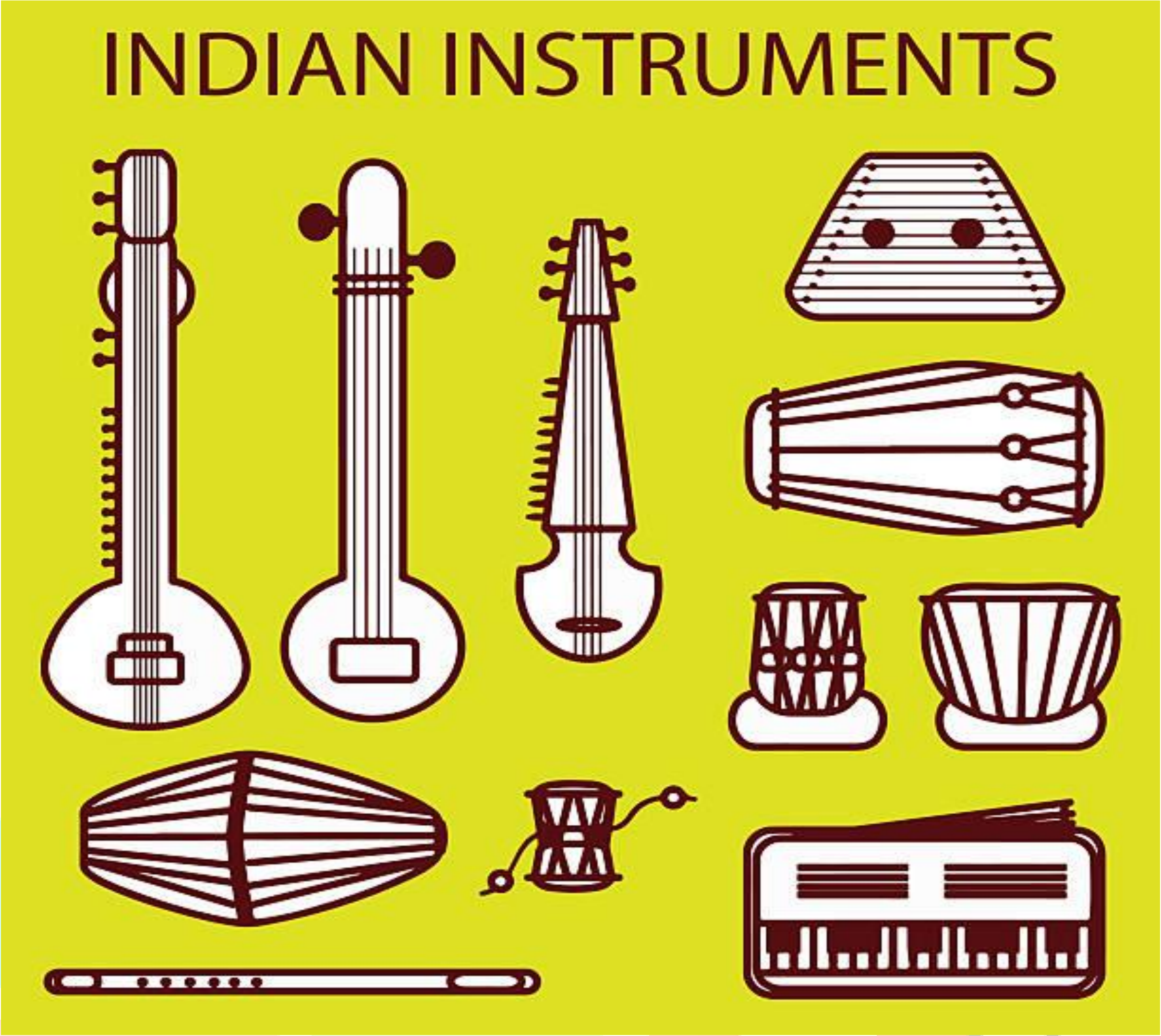
INDIAN INSTRUMENTS

भारतीय शास्त्रीय संगीत के छह प्राथमिक राग

- **राग भैरव** द्द राग भैरव सुबह की राग है। यह अपने मूड में गंभीर और भक्तिपूर्ण है जो गंभीरता और अंतर्मुखता का सुझाव देता है। राग भैरव के लिए आदर्श मनोदशा गंभीर शांति है।
- **राग मलकौंस** द्द यह राग हिंदू देवी पार्वती ;भगवान शिव की पत्नीद्ध द्वारा भगवान शिव को शांत करने के लिए बनाया गया थाए जब वह सती के बलिदान से नाराज तांडव गए थे। राग मालकौंस आधी रात के बादए सुबह के छोटे घंटों में गाया जाता है। राग मालकौंस का प्रभाव मादक और सुखदायक होता है।
- **राग दीपक** द्द राग जिसके बारे में कहा जाता है कि उसमें आग पैदा करने की दिव्य शक्ति हैय जैसा कि नाम से पता चलता है कि दीपक का अर्थ है आग। इसे शाम को गाया जाता है। यह राग एक बार राजा *अकबर* के शाही दरबार में *कथा तानसेन* द्वारा भी किया जाता है।
- **राग श्री** द्द राग श्री शाम के उत्तरार्ध में गाया जाता हैय सूर्यास्त के करीब। राग श्री का मुख्य मूड भक्ति और समर्पण है। राग श्री को अनुग्रह और महिमा से भरा कहा जाता हैय एक भव्य शाम के करीब के लिए बिल्कुल सही।
- **राग मेघ** द्द मेघ का हिंदी में अर्थ है बारिश। जैसा कि नाम से पता चलता हैए राग मेघ मानसून के मौसम के दौरान गाया जाता हैय इसे मेघ मल्हार कहा जाता है। बारिश के स्वागत के लिए राग मेघ गाया जाता है।
- **राग हिंडोल** . एक और मौसमी राग जो दिन की शुरुआत या पहले भाग में गाया जाता है। राग हिंडोल को एक प्राचीन राग कहा जाता है जो वसंत के मौसम से जुड़ा हुआ है

राग सीखने की कला

राग करना सीखना एक चुनौतीपूर्ण और पुरस्कृत प्रक्रिया है। पारंपरिक *गुरु.शिष्य* ;शिक्षक.छात्रद्ध प्रणाली मेंए एक छात्र को राग में महारत हासिल करने के लिए वर्षों के कठोर प्रशिक्षण से गुजरना पड़ता है। इस प्रक्रिया में न केवल स्वरों और पैटर्न को याद रखना शामिल हैए बल्कि राग के पीछे के भावनात्मक सार को भी समझना शामिल है।

वास्तव में एक राग में महारत हासिल करने के लिएए एक संगीतकार को इसकी बारीकियों की अपनी समझ को परिष्कृत करते हुएए बार.बार इसका अभ्यास करना चाहिए। केवल नोट्स को सही ढंग से खेलना पर्याप्त नहीं हैय राग को गहराई से महसूस किया जाना चाहिए। राग के पूर्ण प्रभाव को व्यक्त करने के लिए कलाकार का भावनात्मक संबंध आवश्यक है।

भारतीय शास्त्रीय मुखर संगीत मेंए कामचलाऊ व्यवस्था एक प्रमुख तत्व है। जबकि ऐसे नियम हैं जो राग के प्रदर्शन को नियंत्रित करते हैंए रचनात्मकता के लिए भी जगह है। कलाकार को अपने अनूठे तरीके से राग का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता हैए जिससे प्रदर्शन में नई व्याख्याएं और ताजा भावनात्मक अंतर्दृष्टि आती है

कुछ प्रमुख भारतीय राग और उनका परिचय

भारतीय संगीत में सैकड़ों राग हैं, जिनमें से कुछ अत्यंत लोकप्रिय और मधुर हैं:

1. **राग यमन:**
   - थाट: कल्याण
   - स्वर: शुद्ध सा, तीव्र म और बाकी सभी शुद्ध स्वर (रे, ग, प, ध, नि)।
   - आरोह: नि रे ग मं ध नि सां
   - अवरोह: सां नि ध प मं ग रे सा

- वादी: ग
- संवादी: नि
- समय: रात्रि का पहला प्रहर (सायंकाल)
- भाव: शांत, भक्ति, प्रेम। यह राग बहुत मधुर और शांत प्रभाव उत्पन्न करता है।

2. **राग भैरव:**

- थाट: भैरव
- स्वर: कोमल रे, कोमल ध और बाकी सभी शुद्ध स्वर (सा, ग, म, प, नि)।
- आरोह: सा रे ग म प ध नि सां
- अवरोह: सां नि ध प म ग रे सा
- वादी: ध
- संवादी: रे
- समय: प्रातःकाल (दिन का पहला प्रहर)
- भाव: गंभीर, भक्तिपूर्ण, शांत। यह राग सुबह की शांति और आध्यात्मिकता को दर्शाता है।

3. **राग भूपाल (भूपालि):**

- थाट: कल्याण
- स्वर: औडव-औडव जाति का राग। इसमें ग और ध स्वर शुद्ध लगते हैं। म और नि वर्जित हैं।
- आरोह: सा रे ग प ध सां
- अवरोह: सां ध प ग रे सा
- वादी: ग
- संवादी: ध
- समय: रात्रि का पहला प्रहर
- भाव: शांत, गंभीरता, भक्ति। यह राग कर्नाटक संगीत के राग 'मोहनम' के समान है।

4. **राग दरबारी कान्हड़ा:**

- थाट: आसावरी
- स्वर: तीव्र ग, कोमल ध, कोमल नि (अवरोह में तीव्र नि और शुद्ध ध का प्रयोग भी होता है), बाकी शुद्ध।
- आरोह: सा रे ग म प ध नि सां
- अवरोह: सां ध नि प म ग रे सा
- वादी: रे
- संवादी: प
- समय: रात्रि का दूसरा प्रहर
- भाव: करुण, गंभीर, वीर। यह राग अपनी गंभीरता और विशालता के लिए जाना जाता है।

राग – रागिनी वर्गीकरण

मध्यकालीन की यह विशेषता थी की कुछ रागों को स्त्री और कुछ रागो को पुरुष मानकर रागों की वंश - परम्परा मानी गई। इसी विचारधरा के आधार पर राग-रागिनी पध्दति का जन्म हुआ।

यही भारतीय सृस्टि तत्व का दर्शन है। इसी दृष्टि से सांगीतिक सृस्टि के विकास एवं उत्पत्ति के लिए भी स्त्री पुरुष रूप राग – रागिनी सिद्धान्त का व्यवहार संगीत में पाया जाता है। इसी सिद्धान्त का का प्रभाव राग – रागिनी वर्गीकरण पद्धति के ग्रंथों में दिखाई देता है। इस वर्गीकरण में रागों को पति – पत्नी तथा पुत्र – पुत्रवधू आदि मानकर इसी आधार पर रागों का वर्गीकरण किया गया है। मध्यकालीन क्रियकुशल गुणियों में सूरदास व अन्य अष्टछाप के कवी स्वामी , हरिदास एवं तानसेन आदि राग -रागिनी वर्गीकरण को ही मानने वाले थे।

स्वरसाम्य के साथ स्वरोच्चारण की समानता तथा चलन समता जैसे कुछ सिद्धान्तों को आधार बनाकर इस वर्गीकरण में संशोधन किया गया , परन्तु प्राचीन परम्परा का सुदृढ़ सहयोग न मिल पाने से यह व्यवस्था गुणियों में मान्यता प्राप्त नहीं कर सकी।

राग -रागिनी वर्गीकरण की उत्तपत्ति व मान्यताएँ :-

अर्थात शिव तथा शक्ति के संयोग से रागों की उत्पत्ति हुई। महादेव के पाँच मुखों से पाँच राग और छठा राग पार्वती के मुख से उत्पन्न हुआ , जो इस प्रकार है

महादेव के पाँच से क्रमशः राग उत्पन्न हुए

पूरब मुख	भैरव राग
पश्चिम मुख	हिण्डोल राग
उत्तर मुख	मेघ राग
दसक्षिण मुख	दीपक राग
आकाशोन्मुख	श्री राग

तथा पार्वती जी के मुख से कौशिक राग उत्पन्न हुआ। राग – रागिनी वर्गीकरण उत्तर भारत व दक्षिण भारत दोनों जगह प्रचलित था।

संगीत मकरंद में पुरुष राग , स्त्री राग एवं नपुंसक राग आदि का विभाजन मिलता है तथा इनका संबंध - रौद्र ,वीर ,अद्भुत ,शृंगार ,हास्य , करुण ,भयानक ,वीभत्स और शांत रसों से जोड़ा गया है। इस ग्रन्थ में ताल को विष्णु रूप नाद को शिवरूप एवं गीतों को प्रणव ब्रम्हा रूप बताया गया है।

संगीत दर्पण राग -रागिनी वर्गीकरण का प्रसिद्ध ग्रन्थ स्वीकार किया जाता है।

इसमें शिव तथा शक्ति के संयोग से रागों की उत्तपति निम्न प्रकार बताई है

अद्योवक्त्र मुख से	श्री राग
वामदेव मुख	बसंत राग
अघोर मुख से	भैरव राग
तत्पुरुष मुख से	पंचम
ईशान मुख से	मेघ राग की उत्पत्ति हुई है।

लास्य नृत्य के प्रसंग से पार्वती के मुख से नटटनारायण राग अवतरित हुआ है।

राग – रागिनी वर्गीकरण के चार मत

राग – रागिनी पद्धति को मानने वालों के मुख्य रूप से चार मत है :-

- शिवमत ,कल्लिनाथ मत , हनुमनमत तथा भरत मत। शिवमत को मानने वालों के लिए दामोदर कृत संगीत दर्पण नामक ग्रन्थ महत्वपूर्ण है। शिवमत और कल्लिनाथ मत दोनों में 6 – 6 रागों में 36 – 36 रागिनियाँ बनती हैं,परन्तु रागों के नाम एक होने के बावजूद भी दोनों के रागिनियों में काफी भेद है।
- पंडित लोचन के ग्रन्थ रागतरंगिणी में हनुमनमत के अनुसार राग – रागिनियों के नाम व ध्यान मिलते हैं। ये संगीत दर्पण के राग ध्यानो व नामो के समान है।
- **(1) <u>शिवमत</u>** – संगीत दर्पण के अनुसार 6 रागों की 36 रागिनियों को स्वीकार किया गया है ।प्रत्येक की 6 – 6 रागिनियाँ होती हैं। उन 6 रागों और 36 रागिनियों का विवरण नीचे दिया गया है।
- श्री- मालश्री , त्रिवेणी , गौरी , केदारी , मधुमाधवी , पहाड़िका ।
- बसन्त- देशी , देवगिरी , वराटी , टोड़िका , ललिता , हिंदोली ।
- भैरव- भैरवी , गुजरी , रामकिरी , गुणकिरी , बंगाली , सैंधवी ।
- पंचम- विभाषा , भूपाली , कर्णाटी , नड़हंसिका , पालवी , पटमंजरी ।
- वृहन्नाट- कामोदी , कल्याणी , अमरी , नाटिका , सारंगी , नट्टहम्बीरा ।
- मेघ- मल्लारी , सोरठी , सावेरी , कोशिकी , गंधारी , हरश्रृंगार ।

(2) <u>हनुमान</u> – इस मत के अनुसार 6 राग और प्रत्येक राग की 5 – 5 रागिनियाँ होती हैं। इस मत के 6 रागों और 30 रागिनियों के नाम निम्नांकित तालिका में दिए जाते हैं।

- भैरव- मध्यामादि , भैरवी , बंगाली , बराटिका , सैंधवी ।
- कौशिक- तोड़ी , खम्बावती , गोरी , गुणक्री , ककुभ ।
- हिंदोल- बेलावली , रामकिरी , देशाटया , पख्मंजरी , ललिता ।
- दीपक- केदारी , कानड़ा , देशी , कामोदी , नाटिका ।
- श्री- बासन्ती , मालवी , मालश्री , धनासिक , आसावरी ।
- मेघ- मल्लारी , देशकारी , भूपाली , गुर्जरी , टंका ।

(3) <u>कल्लिनाथमत</u> – की 6 राग और 36 रागिनियाँ इस प्रकार हैं।

- श्री- गौरी , कोलाहल , धवल , वरोराजी , मालकोश , देवगंधार ।

- बसन्त- अधाली , गुणकली , पटमंजरी , गौड़गिरी , धांकी , देवसाग ।
- भैरव- भैरवी , गुर्जरी , बिलावली , बिहाग , कर्नाट , कानड़ा ।
- पंचम- त्रिवेणी , हस्ततरेतहा , अहीरी , कोकम , बेरारी , आसावरी ।
- नटनारायण- तिबन्की , त्रिलंगी , पूर्वी , गांधारी , रामा , सिंधु
- मेघ- बंगाली , मधुरा , कामोद , धनाश्री , देवतीर्थी , दिवाली ।

(4) भरत की 6 राग और 36 रागिनियाँ इस प्रकार हैं।

- भैरव- मधुमाधवी , ललिता , बरोरी , भैरवी , बहुली ।
- मालकोश- गुर्जरी , विद्यावती , तोड़ी , खम्बावती , ककुभ ।
- हिंडोल- रामकली , मालवी , आसावरी , देवरी , केकी ।
- दीपक- केदारी , गौरी , रुद्रावती , कामोद , गुर्जरी ।
- श्री- सैंधवी , काफी , ठुमरी , विचित्रा , सोहनी ।
- मेघ- मल्लारी , सारंग , देशी , रतिवल्लभा , कानरा ।
- इस प्रकार राग – रागिनियों की वंशावली चल पड़ी। उपरोक्त चारों मतों में श्री , भैरव तथा हिंडोल इन तीनों रागों को मुख्य 6 रागों में तो सम्मिलित किया गया , किन्तु आगे चलकर , किन्ही भी दो वर्गीकरणों में समता नहीं रही है। आज यह बताना बड़ा ही कठिन है कि राग – रागिनी पद्धति में स्वरसाम्य , स्वरूप – साम्य अथवा दोनों का ध्यान रखा गया था , क्योंकि मध्यकालीन राग – रागिनियाँ आधुनिक रागों से भिन्न थी।

राग-रागिनी पद्धति की आलोचना

1. ऐतिहासिक संदर्भ में अस्पष्टता:

- राग-रागिनी पद्धति का विकास मध्यकाल में हुआ, विशेषतः संगीतशास्त्रियों जैसे लोचन, सुभंकर और अन्य के समय।
- इसमें 6 मुख्य रागों और उनकी 30 रागिनियों का वर्णन है, परंतु इनका चयन संगीत के सौंदर्यशास्त्र की बजाय प्रतीकात्मक या पौराणिक कथाओं पर आधारित था।
- रागों को "पिता" और रागिनियों को "पत्नी" के रूप में दर्शाना अधिक सामाजिक या धार्मिक दृष्टिकोण से प्रेरित था, न कि संगीतात्मक दृष्टिकोण से।

2. संगीतात्मक आधार की कमी:

- इस पद्धति में रागों का वर्गीकरण उनके स्वरों, थाट, जाति, वादी-संवादी आदि के अनुसार नहीं, बल्कि पारिवारिक संबंधों (पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री) के आधार पर किया गया है।
- इससे रागों के शास्त्रीय तत्वों की समझ में भ्रम उत्पन्न होता है।

3. वैज्ञानिक दृष्टिकोण की अनुपस्थिति:

- आधुनिक संगीतशास्त्र में रागों की व्याख्या स्वरों के आधार पर, थाट प्रणाली द्वारा की जाती है, जो अधिक वैज्ञानिक और तार्किक है।
- राग-रागिनी पद्धति इस दृष्टिकोण से पिछड़ी मानी जाती है क्योंकि इसमें स्वरों की भूमिका को गौण कर दिया गया है।

4. व्यावहारिक उपयोग में कमी:

- वर्तमान में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में इस पद्धति का कोई ठोस व्यावहारिक उपयोग नहीं होता। संगीतज्ञ और विद्यार्थी थाट प्रणाली या समय सिद्धांत को अधिक मान्यता देते हैं।
- राग-रागिनी पद्धति आज केवल ऐतिहासिक या सांस्कृतिक अध्ययन तक सीमित है।

5. भ्रम पैदा करने वाली संरचना:

- कई बार एक ही राग को विभिन्न रागों की रागिनी बताया गया है, जिससे संगीत शिक्षार्थियों के लिए समझना कठिन हो जाता है। उदाहरण: "मल्हार" कई स्थानों पर भिन्न रूपों में दिखाया गया है।

निष्कर्ष:

राग-रागिनी पद्धति भारतीय संगीत इतिहास का एक रोचक और सांस्कृतिक पहलू है, परंतु यह वैज्ञानिक या संगीतात्मक दृष्टिकोण से दोषपूर्ण मानी जाती है। आधुनिक संगीतशास्त्र इसके स्थान पर अधिक तार्किक और व्यवस्थित प्रणालियों को अपनाता है, जैसे कि थाट पद्धति और समय सिद्धांत। अतः, राग-रागिनी पद्धति को एक ऐतिहासिक विरासत के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि वर्तमान संगीत का मार्गदर्शक सिद्धांत।

रागों का समय चक्र

भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का गायन वादन निश्चित समय पर करना अधिक प्रभावशाली माना गया है। यह विश्वास है कि हर राग का एक विशिष्ट समय होता है जिसमें वह अपनी पूर्ण भाव-प्रवणता और रस उत्पन्न करता है। इसे ही "रागों का समय चक्र" कहते हैं।

रागों का समय चक्र: मुख्य वर्गीकरण

भारतीय दिन-रात्रि को संगीत में कुल 8 प्रहरों (प्रत्येक 3 घंटे) में बाँटा गया है:

प्रहर	समय	रागों का उदाहरण
1. प्रात:काल (1st प्रहर)	4 AM - 7 AM	भैरव, रामकली, बिलासखानी टोड़ी
2. प्रात: (2nd प्रहर)	7 AM - 10 AM	तोड़ी, गुजरी टोड़ी, ललित
3. पूर्वाह्न (3rd प्रहर)	10 AM - 1 PM	अहिर भैरव, देसकर
4. मध्याह्न (4th प्रहर)	1 PM - 4 PM	सारंग, बृंदावनी सारंग
5. अपराह्न (5th प्रहर)	4 PM - 7 PM	मियां की सारंग, शुद्ध सारंग
6. संध्या (6th प्रहर)	7 PM - 10 PM	यमन, पूरियाधनाश्री
7. रात्रि (7th प्रहर)	10 PM - 1 AM	दरबारी, मालकौंस, बिहाग
8. मध्य रात्रि (8th प्रहर)	1 AM - 4 AM	खमाज, शंकरा, सुहाना

समय निर्धारण का आधार

रागों का समय उनके वादी स्वरों (प्रमुख स्वर) के स्थान और तीव्र या कोमल स्वरों पर आधारित होता है:

- पूर्वांग वादी राग (सा-पा के बीच): प्रातः से दोपहर तक गाए जाते हैं।
- उत्तरांग वादी राग (पा-सां के बीच): दोपहर से रात्रि तक गाए जाते हैं।
- कोमल स्वर वाले राग: रात्रि और प्रातः के समय अधिक प्रभावी माने जाते हैं (जैसे भैरव, मालकौंस)।
- तीव्र स्वर वाले राग: संध्या या रात्रि प्रारंभ में गाए जाते हैं (जैसे यमन)।

विशेष बातें:

- यह समय सिद्धांत विशेषकर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में मान्य है। कर्नाटिक संगीत में समय का इतना कठोर बंधन नहीं होता।
- कुछ राग जैसे भीमपलासी, दरबारी आदि विशेष प्रभावी होते हैं अपने निश्चित समय पर।
- मंचीय प्रस्तुतियों में कभी-कभी राग समय की बाध्यता को तोड़ा भी जाता है।

निष्कर्ष:

रागों का समय चक्र संगीत के भावों और प्रकृति को प्रकृति के चक्र से जोड़ने का एक अनुपम प्रयास है। यह सिद्धांत न केवल राग की प्रभावशीलता को बढ़ाता है, बल्कि श्रोता की मनोदशा और वातावरण को भी नियंत्रित करता है।

राग 474 ठाट

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अंग (पृष्ठ) संख्या 474 पर दर्ज राग की ओर संकेत करता है, जो "राग आसा" है। आइए इसका विश्लेषण करें:

राग आसा (Raag Asa)

- ठाट (Thaat): बिलावल
- जाति (Jati): षाडव-सम्पूर्ण (षडज-सम्पूर्ण)
- आरोह (Aroha): सा रे म प नि सां
- अवरोह (Avaroha): सा नि ध प म ग रे सा
- वादी स्वर (Vadi): म (मध्यम)
- संवादी स्वर (Samvadi): सा (षडज)
- गायन समय: प्रातःकाल (सुबह 3 बजे से 6 बजे तक)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में राग आसा

राग आसा का उपयोग श्री गुरु ग्रंथ साहिब में व्यापक रूप से किया गया है, विशेष रूप से "आसा की वार" में, जो अंग 470 से 475 तक फैली हुई है। अंग 474 पर, गुरु अंगद देव जी की बाणी इस राग में प्रस्तुत की गई है, जो आध्यात्मिक जागरूकता और नैतिकता पर बल देती है।

राग आसा की विशेषताएं

- भावनात्मक प्रभाव: यह राग प्रेरणा, उत्साह और भक्ति की भावना को जागृत करता है।
- उपयोग: गुरबाणी में इसका प्रयोग आत्मिक उन्नति और नैतिक मूल्यों को प्रकट करने के लिए किया जाता है।
- संगीतिक संरचना: इस राग की आरोह और अवरोह में विशेष स्वर संयोजन होते हैं, जो इसे अन्य रागों से विशिष्ट बनाते हैं।

"एक ठाट से 474 रागों की उत्पत्ति का वर्णन"

सबसे पहले समझें: "ठाट" क्या है?

ठाट (Thaat) = रागों का प्रारंभिक ढाँचा या parent scale।

भारतीय शास्त्रीय संगीत (विशेषतः हिंदुस्तानी संगीत) में, ठाट प्रणाली का विकास "पं. विष्णु नारायण भातखंडे" ने किया था। उन्होंने सभी रागों को 10 ठाटों में वर्गीकृत किया।

प्रमुख 10 ठाट और उनसे उत्पन्न राग

भातखंडे के अनुसार, 10 ठाट हैं:

ठाट का नाम	कुछ प्रमुख राग
1. **बिलावल**	राग शंकरा, दुर्गा, देसकर
2. **खमाज**	राग झिंझोटी, खमाज, राग दादी
3. **कल्याण**	यमन, पूरियाकल्याण, हेमंत
4. **भैरव**	भैरव, अहिर भैरव, जागेश्वरी
5. **पूर्वी**	पूरिया, पूर्वी, गुणकली
6. **मारवा**	मारवा, ललित, विभास
7. **आसावरी**	दरबारी, जनसंमोहिनी, कौशी कंहड़ा
8. **भैरवी**	भैरवी, सिंधु भैरवी, मांड
9. **तोड़ी**	मियाँ की टोड़ी, गुजरी तोड़ी
10. **काफी**	काफी, बागेश्वरी, भीमपलासी

एक ठाट से 474 राग कैसे?

यह एक सैद्धांतिक संभावना है, जो स्वरों के संयोग, आरोह-अवरोह, वादी-संवादी, भाव और समय के आधार पर बनती है।

कैसे संभव है?

1. 1 ठाट में 7 स्वर होते हैं।
2. उन्हीं स्वरों के अलग-अलग संयोजन, आरोह-अवरोह, विश्राम बिंदु, वादी-संवादी आदि बदलने से नए राग बनते हैं।
3. उदाहरण:
    - कल्याण ठाट से ही — यमन, पूरियाकल्याण, हेमंत, शुद्ध कल्याण, कामोद आदि कई राग बनते हैं।
4. इसी तरह, एक ठाट से 50+ राग बन सकते हैं।
5. इसलिए 10 ठाट × 50 = 500 रागों की सैद्धांतिक संभावना बनती है।

भातखंडे ने 400+ रागों को सूचीबद्ध किया, जिनमें कई एक ही ठाट से उत्पन्न होते हैं।

निष्कर्ष:

- "एक ठाट" एक मूल संरचना है।
- "474 राग" अनेक प्रकार के स्वर व्यवहार, भाव, और व्याख्या से उत्पन्न हो सकते हैं।
- यह संगीत की रचनात्मकता और लचीलापन को दर्शाता है।

गायन-वादन की समयावधि

1. पूर्व राग (Purv Raga)

"पूर्व" शब्द का अर्थ होता है "पूर्वाह्न" या "पहले भाग"।
यह राग दोपहर से पहले या दिन के पहले भाग में गाए जाते हैं।

गायन समय:

- प्रातः 12 बजे तक (सुबह से दोपहर तक)
- दिन का पूर्वार्ध (6 AM – 12 Noon)

लक्षण:

- इन रागों में तीव्र मध्यम (M#) का प्रयोग अधिक होता है।
- संगीत में अधिक उत्साह, तेजस्विता और जागृति का भाव रहता है।

उदाहरण राग:

- राग भैरव
- राग तोड़ी
- राग ललित
- राग पूर्वी
- राग विभास

2. उत्तर राग (Uttar Raga)

"उत्तर" का अर्थ होता है "बाद में" या "दोपहर के बाद"।
ये राग दोपहर के बाद से रात तक गाए जाते हैं।

गायन समय:

- दोपहर 12 बजे के बाद (दोपहर से रात तक)
- दिन का उत्तरार्ध (12 Noon – 12 Midnight)

लक्षण:

- इनमें सामान्यतः शुद्ध मध्यम (M) का प्रयोग होता है।

- भावों में गंभीरता, शांति, करुणा या भक्ति होती है।

उदाहरण राग:

- राग यमन
- राग दरबारी
- राग भूपाली
- राग भीमपलासी
- राग केदार

समय के अनुसार रागों का प्रभाव

भारतीय संगीत शास्त्र मानता है कि रागों का प्रभाव मानव मन, वातावरण और शरीर की प्रकृति पर निर्भर करता है। इसलिए एक ही राग को सही समय पर गाना-वादन करना ज़रूरी माना गया है।

सारांश तालिका:

श्रेणी	समय	स्वर की विशेषता	भाव	उदाहरण राग
पूर्व राग	सुबह से दोपहर तक	तीव्र मध्यम	तेजस्विता, प्रेरणा	भैरव, ललित, तोड़ी
उत्तर राग	दोपहर से रात तक	शुद्ध मध्यम	शांति, भक्ति	यमन, केदार, दरबारी

परमेल राग, प्रवेशक राग, और आश्रय राग

भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों की गहराई को समझने के लिए परमेल राग, प्रवेशक राग, और आश्रय राग जैसे शब्दों का अध्ययन करना आवश्यक होता है। ये सभी रागों के गठन, उत्पत्ति और संबंध को स्पष्ट करने में सहायक होते हैं।

1. आश्रय राग (Ashray Raga)

ये वे राग होते हैं जो किसी ठाट पर आधारित होते हैं और उसी ठाट का प्रतिनिधित्व करते हैं।

विशेषताएँ:

- हर ठाट में एक ऐसा राग होता है जो उस ठाट के स्वरों का संपूर्ण और स्पष्ट रूप में प्रयोग करता है।
- इसे ही उस ठाट का आश्रय राग कहा जाता है।

उदाहरण:

ठाट का नाम	आश्रय राग
बिलावल ठाट	राग बिलावल
यमन (कल्याण)	राग यमन
भैरव ठाट	राग भैरव
खमाज ठाट	राग खमाज
काफी ठाट	राग काफी
आसावरी ठाट	राग आसावरी

2. प्रवेशक राग (Praveshak Raga)

ये वे राग होते हैं जो किसी विशिष्ट ठाट में आने वाले रागों की विशेषताएँ प्रदर्शित करते हैं। ये राग अन्य रागों को उस ठाट में लाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

विशेषताएँ:

- इन रागों में उस ठाट की सबसे प्रमुख लक्षण-स्वर और मूवमेंट पाए जाते हैं।
- इसलिए वे "ठाट में प्रवेश कराने वाले राग" कहलाते हैं।

उदाहरण:

- राग यमन → कल्याण ठाट का प्रवेशक राग
- राग भीमपलासी → काफी ठाट का प्रवेशक राग

---

3. परमेल राग (Parmél Raga)

"परमेल" का अर्थ है – मिश्रित या मिलाया गया।

परमेल राग वे राग होते हैं जो दो या अधिक ठाटों या रागों के स्वर-संयोजन से बनते हैं।

विशेषताएँ:

- इनमें एक से अधिक रागों के स्वर या phrases मिलते हैं।
- कभी-कभी इन्हें "संकर राग" (Hybrid Ragas) भी कहा जाता है।

उदाहरण:

परमेल राग	मिश्रण राग
राग हंसध्वनि	शुद्ध स्वर + कर्नाटिक प्रभाव
राग चंद्रकौंस	मालकौंस + पश्चिमी प्रभाव
राग पिलू	काफी + खमाज + भैरवी

संक्षिप्त सार:

शब्द	अर्थ	उदाहरण
आश्रय राग	ठाट का प्रतिनिधि राग	राग यमन (कल्याण ठाट)
प्रवेशक राग	ठाट में आने वाले रागों की प्रविष्टि कराने वाला	राग भीमपलासी
परमेल राग	मिश्रित स्वर वाले राग (दो या अधिक रागों से मिलकर बने)	राग चंद्रकौंस, पिलू

1. आश्रय राग (Ashray Raga) – "जड़ से शाखा तक"

विशेषताएँ विस्तार में:

- हर ठाट का आधार एक मुख्य राग होता है, जिसे उस ठाट का "आश्रय राग" कहा जाता है।
- ठाट का नाम अकसर उसी आश्रय राग के नाम पर होता है।
- यह राग उस ठाट के सभी स्वरों को शुद्ध रूप से प्रस्तुत करता है।

ध्यान देने योग्य बात:

- आश्रय राग के माध्यम से हम ठाट के स्वर रूप को समझ सकते हैं।
- ये राग आमतौर पर सरल, संपूर्ण (7 स्वर) और स्वर की स्पष्टता लिए होते हैं।

उदाहरण:

ठाट	आश्रय राग	स्वर-संयोजन
भैरव	भैरव	सा रे(komal) ग म प ध(komal) नि सा

ठाट	आश्रय राग	स्वर-संयोजन
मारवा	मारवा	सा रे तीव्र ग म तारा नी

2. प्रवेशक राग (Praveshak Raga) – "रास्ता दिखाने वाला राग"

विशेषताएँ विस्तार में:

- ये राग किसी ठाट में पाए जाने वाले रागों की विशेषताएँ दर्शाते हैं।
- ठाट के लक्षण-स्वरों की अभिव्यक्ति इनमें गहराई से होती है।
- इनका अभ्यास कर लेने पर उस ठाट के अन्य रागों को सीखना आसान होता है।

उदाहरण:

- राग यमन (प्रवेशक – कल्याण ठाट)
  इसमें तीव्र मध्यम की प्रधानता है, जो कल्याण ठाट की पहचान है।
- राग मुल्तानी (प्रवेशक – तोड़ी ठाट)
  इसमें कोमल गंधार और कोमल धैवत के प्रयोग से तोड़ी ठाट की विशेषता मिलती है।

3. परमेल राग (Parmél Raga) – "रागों का संगम"

विशेषताएँ विस्तार में:

- यह किसी एक ठाट पर आधारित नहीं होता।
- इसमें अनेक ठाटों या रागों की झलक मिलती है।
- ये राग आमतौर पर अभिनव रचनाकारों द्वारा बनाए गए होते हैं।

कुछ परमेल रागों को 'चंचल राग' भी कहा जाता है क्योंकि इनका व्यवहार शुद्ध रागों जैसा नहीं होता।

उदाहरण:

परमेल राग	संगत	विशिष्टता
राग पिलू	काफी + खमाज + भैरवी	बहुत लचीला राग; ठुमरी में लोकप्रिय
राग झिंझोटी	खमाज + काफी	ठुमरी, दादरा में प्रचलित
राग मांड	खमाज + पिलू	लोक संगीत प्रभाव वाला परमेल राग

अन्य संबंधित अवधारणाएँ (Extra Knowledge):

उप-राग (Up-Raga):

- कोई राग जब अपने मूल राग से थोड़ा भिन्न होकर नया रूप ले लेता है, तो वह उप-राग कहलाता है।
  जैसे: भीमपलासी को कई लोग काफी का उप-राग मानते हैं।

जन्य राग (Janya Raga):

- कोई राग किसी ठाट (या मेल) से उत्पन्न होता है, उसे उसका जन्य राग कहते हैं।
  जैसे: यमन = कल्याण ठाट का जन्य राग।

याद रखने की ट्रिक:

शब्द	मतलब	याद रखने की ट्रिक
आश्रय राग	ठाट का मूल राग	“जिस पर ठाट टिका है”
प्रवेशक राग	ठाट का प्रवेश द्वार	“जो बाकी रागों का रास्ता खोलता है”
परमेल राग	मिलाजुला राग	“जिसमें दो या अधिक राग मिलें”

स्वरलिपियों

"स्वरलिपियों में तुलना" का अर्थ है — विभिन्न संगीत तत्वों जैसे लुलना, मींड, मुरकी, कंपन, आदि को स्वरलिपि के माध्यम से एक-दूसरे से तुलना करना।

यहाँ मैं आपको स्पष्ट स्वरलिपीय उदाहरणों और एक सारणी (table) के माध्यम से तुलना करवा रहा हूँ, जिससे आप समझ सकें कि कैसे हर एक अलंकार या ornamentation स्वर-लिपि में अलग दिखता है और सुनाई देता है:

स्वरलिपियों में तुलना: लुलना, मींड, मुरकी, गमक

अलंकार / तकनीक	परिभाषा (संक्षेप में)	स्वर-लिपि उदाहरण	स्वर प्रयोग का प्रभाव
लुलना	स्वर को लहराते हुए, कोमल ढंग से गाना	र~ग~म~ग	सौम्यता, भावपूर्ण
मींड	एक स्वर से दूसरे में खींचकर जाना	ग -------- म (धीरे slide)	गहराई, फैलाव, रागत्व
मुरकी	तीव्र गति से 2-3 स्वर छूकर लौटना	गमग या रगरे	चंचलता, सजावट
गमक	ज़ोरदार, तीव्र कंपन के साथ स्वर दोहराना	गऽऽगऽऽगऽऽ	बल, शक्ति, नाटकीयता

अलंकार / तकनीक	परिभाषा (संक्षेप में)	स्वर-लिपि उदाहरण	स्वर प्रयोग का प्रभाव
कंपन (vibrato)	स्वर में कंपन उत्पन्न करना (स्थायी या अस्थायी)	ग▯ ग▯ ग▯ (tilde से दर्शाया)	मधुरता, आधुनिक भाव

उदाहरण: यदि मूल स्वर "ग" है

तकनीक	उसका उपयोग
लुलना	र~ग~म~ग → ग स्वर को लहराकर गाया गया।
मींड	ग——म → ग से म तक लंबा स्लाइड।
मुरकी	गमग → बहुत तीव्र गमक/झटका स्वर।
गमक	गऽऽगऽऽगऽऽ → कंपन या झटकों से बलयुक्त गायन।
कंपन	ग▯ ग▯ ग▯ → हिलता-डुलता स्वर (मॉडर्न कंपन)।

शिक्षार्थियों के लिए टिप्स:

- लुलना का अभ्यास धीमी लय में करें – तबला पर "तीनताल" के साथ आलाप गाएं।
- मींड तब सबसे अच्छा लगता है जब स्वर की दूरी अधिक हो (जैसे ग→प)।
- मुरकी और गमक को तेज़ और स्पष्ट आवाज़ में बोलने की क्षमता चाहिए।
- कंपन आमतौर पर वेस्टर्न म्यूजिक की शैली में होता है, पर अब फ्यूज़न रागों में उपयोग बढ़ रहा है।

राग में लय की भूमिका

1. राग और लय का आधार

- राग: स्वरों का ऐसा समूह जिसमें आरोह-अवरोह, स्वर प्रयोग, और भाव होता है।
- लय (ताल): संगीत की समयबद्धता, यानी स्वरों या तालबद्ध ध्वनियों का नियमित चक्र।

2. लय राग में क्यों ज़रूरी है?

कारण	विवरण
समयबद्धता (Timing)	लय से राग का प्रदर्शन समयबद्ध और संगठित होता है।
संगीत की संरचना	लय के चक्र में राग के स्वर व्यवस्थित होते हैं।
भाव का सशक्तिकरण	ताल की गति और स्वर तालमेल से भाव अधिक प्रभावी बनता है।
राग की विशिष्टता	विभिन्न रागों में लय के अनुसार स्वर की गति व प्रकृति बदलती है।
संगीत में संवाद	लय के माध्यम से कलाकार और वादक के बीच संवाद बनता है।

3. राग और लय के बीच संबंध

- राग का आरोह-अवरोह, मूलस्वर, और विशेष स्वरों को लय में समयानुसार जगह मिलती है।
- लय की गति (द्रुत, मध्यम, धीमा) से राग का भाव, रस, और शैली प्रभावित होती है।
- उदाहरण:
    - धीमे ताल (जैसे दादरा) में राग का भाव अधिक गहरा और भावुक होता है।
    - तेज ताल (जैसे रुपक) में राग अधिक चपल और जीवंत लगता है।

4. राग का लयबद्ध प्रदर्शन

- अलाप (लय रहित) के बाद लय में प्रवेश होता है, जहाँ ताल और राग का मेल होता है।
- तबला या अन्य ताल वाद्य लय की चौड़ाई बढ़ाते हैं।
- कलाकार लय के विभिन्न आयामों में स्वर सजावट (जैसे मींड, गमक, मुरकी) को ताल के अनुरूप प्रस्तुत करता है।

---

5. सारांश

भूमिका	विवरण
लय राग को जीवन देता है।	बिना लय के राग केवल स्वरमाला जैसा लगता है।
लय से संगीत में तालमेल बनता है।	कलाकार और वादक एक ताल में बंधे रहते हैं।
लय से भावों का संचार होता है।	राग का संगीतमय प्रभाव बढ़ता है।

राग में आरोह-अवरोह का महत्व

1. आरोह (Aaroh) — राग का आरोही क्रम

- आरोह का मतलब है स्वरों का ऊपर की ओर चढ़ना।
- यह राग में इस्तेमाल होने वाले स्वरों का वह क्रम है जिससे आवाज़ ऊपर की ओर बढ़ती है।

- आरोह से हमें पता चलता है कि राग को कैसे शुरू और बढ़ाया जाता है।
- उदाहरण:
  राग यमन का आरोह — नी सा रे ग म ध नि सां

2. अवरोह (Avaroh) — राग का अवरोही क्रम

- अवरोह का मतलब है स्वरों का नीचे की ओर उतरना।
- यह स्वरों का वह क्रम है जिससे आवाज़ नीचे की ओर जाती है।
- अवरोह से राग की वापसी या समापन स्वर की पहचान होती है।
- उदाहरण:
  राग यमन का अवरोह — सा नि ध प म ग रे सा

3. महत्त्व

महत्त्व	विवरण
राग की पहचान	आरोह-अवरोह से राग का स्वरूप और उसकी सीमाएँ तय होती हैं।
स्वर चयन	कौन से स्वर उपयोग होंगे और किस क्रम में, यह आरोह-अवरोह से निर्धारित होता है।
भाव-विकास (Expression)	आरोह-अवरोह के माध्यम से राग का भाव गहराई से प्रकट होता है।
नियंत्रित सजावट	मींड, गमक, मुरकी आदि अलंकार आरोह-अवरोह के आधार पर ही लगते हैं।
रचनात्मकता की दिशा	राग की रचना, विकास और सुधार आरोह-अवरोह के अनुसार होती है।

4. विशेष बातें

- कुछ रागों में आरोह-अवरोह में स्वर भेद (जैसे कोमल या तीव्र स्वर) भी अलग होते हैं, जो राग की विशिष्टता बढ़ाते हैं।
- आरोह या अवरोह में स्वर छूटना या जंप करना (जैसे स्किपिंग) भी राग की खास पहचान हो सकती है।
- कई बार आरोह और अवरोह का क्रम समान नहीं होता, जिससे राग की विशेषता और बढ़ती है।

5. सारांश

तत्व	भूमिका
आरोह	राग का विकास और चढ़ाव
अवरोह	राग का समापन और उतराव
दोनों मिलकर	राग का पूरा स्वरूप और पहचान बनाते हैं

IJCRT

© 2025 IJCRT | Volume 13, Issue 7 July 2025 | ISSN: 2320-2882

श्रुतियों का स्वरों में विभाजन

1. श्रुति क्या है?

- श्रुति का अर्थ है □सुनाई देने वाला सूक्ष्म अंतर□ या □स्वर की सबसे छोटी इकाई□।
- यह स्वर और स्वर के बीच की वह सूक्ष्म दूरी है जिसे मानव कान अलग-अलग सुन सकता है।
- शास्त्रीय संगीत में एक सप्तक (7 स्वरों) को 22 श्रुतियों में बाँटा गया है।

2. स्वर और श्रुति का संबंध

स्वर	श्रुति की संख्या	विवरण
सा (षड्ज)	4 श्रुति	स्थिर स्वर, अनुत्तर (अचल) स्वर
रे (ऋषभ)	3 श्रुति	3 प्रकार: शुद्ध, तीरथ, खण्डित
ग (गंधार)	2 श्रुति	2 प्रकार: शुद्ध, तीरथ
म (मध्यम)	4 श्रुति	शुद्ध और तीव्र स्वर (मध्यमा)
प (पंचम)	4 श्रुति	स्थिर स्वर, अनुत्तर स्वर
ध (धैवत)	3 श्रुति	3 प्रकार: शुद्ध, तीरथ, खण्डित
नि (निषाद)	2 श्रुति	2 प्रकार: शुद्ध, तीरथ

3. श्रुतियों का महत्व

- स्वरों की सूक्ष्मता: श्रुतियाँ स्वर की सूक्ष्मताओं को दर्शाती हैं।
- राग की पहचान: अलग-अलग रागों में श्रुतियों का विशेष प्रयोग होता है।
- स्वर-संयोजन: स्वर को सूक्ष्म श्रुतियों के अनुसार सही तराज़ू में पकड़ा जाता है।
- अलंकार और सजावट: गमक, मींड, मुरकी जैसी सजावट श्रुतियों पर आधारित होती हैं।

4. श्रुतियों का वर्गीकरण

श्रुति का नाम	**विवरण**
शुद्ध श्रुति	मुख्य और सही स्वर स्थिति
तीरथ श्रुति	मध्य स्थिति
खंडित श्रुति	कम या अधिक मात्रा वाली श्रुति

5. सारांश

तत्व	**भूमिका**
श्रुति	स्वर के बीच की सबसे सूक्ष्म इकाई
स्वर	श्रुतियों का समूह जो संगीत बनाते हैं
राग	श्रुतियों और स्वरों का विशेष संयोजन

रागमाला क्या है?

- रागमाला का अर्थ है "रागों का माला" यानी रागों का समूह या श्रृंखला।
- यह एक संग्रह होता है जिसमें विभिन्न रागों को एक श्रृंखला के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- रागमाला में रागों को चित्रों, परिवारों, या भावों के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है।
- हर राग को एक विशेष रंग, मूड, या देवी-देवता से जोड़ा जाता है।

रागमाला की परंपरा

- प्राचीन काल से चली आ रही है।
- रागों को जीवंत रूप देने के लिए चित्र और कथाएं बनाई गईं।
- रागमाला चित्रकला में भी प्रचलित है, जहाँ हर राग को एक व्यक्ति या देवता के रूप में दर्शाया जाता है।

रागमाला के प्रमुख वर्ग

रागों को विभिन्न ठाट और परिवारों में बांटा जाता है। कुछ प्रमुख परिवार हैं:

परिवार (माला)	**उदाहरण राग**
भैरव माला	भैरव, भूपाली, भव
काफ़ी माला	काफ़ी, ढिंढार, दरबारी
मेघ माला	मेघ, मल्हार, गरज
धैवत माला	धैवत, धैवताली
तोड़ी माला	तोड़ी, भैरवी, मल्हार

रागमाला चित्रकला

- हर राग को एक महिला या पुरुष रूप में चित्रित किया जाता है।
- ये चित्र उस राग के भाव, समय और रस को दर्शाते हैं।
- उदाहरण: राग भैरव को एक गम्भीर व गंभीर पुरुष के रूप में, जबकि राग मेघ को बादल और बारिश के रूप में दर्शाया जाता है।

रागमाला का महत्व

- रागों को याद रखने और समझने में मदद करता है।
- रागों के भाव और समय की जानकारी देता है।
- संगीत और कला का संगम है।
- शास्त्रीय संगीत की शिक्षा और सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा।

राग में शुद्ध स्वर और विकृत स्वर का महत्व

1. शुद्ध स्वर (Shuddha Swar)

- शुद्ध स्वर वे स्वरों को कहते हैं जो अपवर्तित (unaltered) या मूल स्वर होते हैं।
- सप्तक के सात स्वरों में से पाँच स्वर (सा, रे, ग, म, प, ध, नि) में से कुछ शुद्ध स्वर होते हैं, जो प्राकृतिक स्वर होते हैं।
- शुद्ध स्वर राग की मूल संरचना और स्थिरता बनाए रखते हैं।
- उदाहरण: सा (षड्ज), प (पंचम) अधिकांश रागों में शुद्ध स्वर होते हैं।

महत्व:

- राग की पहचान और अडिग आधार होते हैं।
- भाव और मूल स्वरूप को स्थिरता देते हैं।
- बिना शुद्ध स्वरों के राग की संरचना अधूरी लगती है।

2. विकृत स्वर (Vikrit Swar)

- विकृत स्वर वे स्वर होते हैं जो शुद्ध स्वर से कोमल (softened) या तीव्र (sharp) होते हैं, अर्थात् स्वर में बदलाव होता है।
- ये स्वर रागों में विविधता और विशेषता जोड़ते हैं।
- उदाहरण:
  - कोमल रे (Re flat), कोमल ग (Ga flat), कोमल ध, कोमल नि
  - तीव्र मध्यम (म♯)

महत्व:

- राग की विशिष्टता और रंगत बढ़ाते हैं।
- राग के भाव और मूड को गहराई देते हैं।
- राग को अन्य रागों से अलग पहचान दिलाते हैं।

3. शुद्ध और विकृत स्वरों का मेल

भूमिका	**विवरण**
राग की संरचना	शुद्ध स्वर आधार बनाते हैं।
राग की विशिष्टता	विकृत स्वर राग को विशिष्ट बनाते हैं।
भाव एवं रस का निर्माण	दोनों स्वर मिलकर राग का भाव उत्पन्न करते हैं।
अभिव्यक्ति और सजावट	विकृत स्वर अलंकारों में विविधता लाते हैं।

---

4. उदाहरण:

- राग भैरव में कोमल रे और कोमल ध होते हैं, जो इसे अन्य रागों से अलग बनाते हैं।
- राग यमन में तीव्र मध्यम (म♯) होता है जो राग की विशिष्टता है।

सारांश

स्वर प्रकार	भूमिका
शुद्ध स्वर	राग की स्थिरता, आधार, पहचान
विकृत स्वर	राग की विविधता, विशिष्टता, भाव

राग में पकड़, आलाप, तान, कर्न, मुरकी, गमक, मीड़ का महत्व

1. पकड़ (Pakad)

- पकड़ राग की पहचान और आत्मा होती है।
- यह राग के स्वर संयोजन का एक छोटा लेकिन विशिष्ट क्रम होता है जिससे राग की विशेषता स्पष्ट होती है।
- पकड़ के बिना राग का स्वरूप अस्पष्ट और मिश्रित लग सकता है।

महत्त्व:

राग को सुनते ही पकड़ से ही पता चल जाता है कि यह कौन सा राग है।

2. आलाप (Alaap)

- आलाप राग की धीमी, सुरम्य और स्वतंत्र प्रस्तुति है जिसमें ताल और लय की सीमाएं नहीं होती।
- यह राग की शुरुआत में होता है, और राग के स्वर और भाव को सहजता से प्रकट करता है।
- आलाप से राग की गहराई और भावुकता का पता चलता है।

महत्त्व:

राग के स्वरूप और भाव को विस्तार से व्यक्त करता है।

3. तान (Taan)

- तान तेज़ गति में स्वरों की श्रृंखला होती है, जो गायक या वादक की तकनीकी क्षमता दर्शाती है।
- तान से राग में उत्साह और ऊर्जा आती है।

- यह संगीत का रोमांचक हिस्सा होता है।

<u>महत्त्व:</u>

राग की गति, लय और निपुणता दिखाता है।

4. कर्न (Karn)

- कर्न राग का एक अलंकार है, जिसमें स्वर के ऊपर या नीचे झुकाव या गुमाव (स्वर विकृति) होती है।
- यह स्वर को सजाने और राग को अधिक सुंदर बनाने में मदद करता है।

महत्त्व:

राग में भाव और सजावट बढ़ाता है।

5. मुरकी (Murki)

- मुरकी एक छोटा अलंकार है जिसमें जल्दी-जल्दी स्वरों का छोटा सा झरना होता है।
- यह राग को जीवंत और ताजगीपूर्ण बनाता है।

महत्त्व:

स्वर सजावट और राग में चपलता लाता है।

6. गमक (Gamak)

- गमक स्वर के ऊपर जोर-शोर या कम्पन (विब्रेशन) को कहते हैं।
- यह राग की भव्यता और गहराई को बढ़ाता है।
- कई रागों में गमक अनिवार्य होता है।

महत्त्व:

स्वर को गहरा, भावपूर्ण और मनमोहक बनाता है।

7. मीड़ (Meend)

- मीड़ स्वर के बीच में स्वरों का धीरे-धीरे जुड़ना या स्लाइड होता है।
- यह राग को एकतरफा और लयबद्ध बनाता है।
- मीड़ से राग की सहजता और भावुकता बढ़ती है।
- महत्त्व:
  राग को सुरों के बीच प्रवाहमय बनाता है।

सारांश

तत्व	भूमिका
पकड़	राग की पहचान और मूल संरचना
आलाप	राग की भावना और स्वरूप का विस्तार
तान	गति, ऊर्जा, और कलाकार की निपुणता
कर्न	स्वर सजावट और भावपूर्णता
मुरकी	जीवंतता और ताजगी
गमक	गहराई, भव्यता, और भाव
मीड़	सुरों के बीच प्रवाह और सहजता

आधुनिक आलाप विधि (Modern Alaap Vidhi)

1. आधुनिक आलाप की विशेषताएँ

- **ताल और लय का पालन:** पारंपरिक आलाप आमतौर पर बिना ताल के स्वतंत्र स्वरमालिका होती थी, जबकि आधुनिक आलाप में कभी-कभी हल्के ताल या लय के संकेत होते हैं।
- **संगीत के अन्य शैलियों का समावेश:** आधुनिक आलाप में कभी-कभी अन्य संगीत शैलियों (जैसे फ़्यूज़न, जैज़) के प्रभाव देखे जाते हैं।
- **अलंकारों और तकनीकों का अधिक प्रयोग:** मुरकी, गमक, मीड़, तान आदि अलंकारों का समृद्ध प्रयोग होता है।
- **विविध गति का उपयोग:** आलाप की शुरुआत धीमी गति से होती है और धीरे-धीरे तेज़ गति में बदल जाती है, जिससे अधिक ड्रामैटिक प्रभाव उत्पन्न होता है।
- **नवीन स्वर संयोजन:** कुछ नए स्वर संयोजन या प्रयोग जो पारंपरिक रूप से कम होते थे, आधुनिक आलाप में शामिल किए जाते हैं।

---

2. आधुनिक आलाप की संरचना

चरण	विवरण
धीमा आलाप	बहुत धीरे-धीरे स्वर प्रस्तुत करना, राग की आत्मा को समझाना
मध्यम आलाप	थोड़ी गति बढ़ाकर स्वर सजावट और अलंकारों का उपयोग
तीव्र आलाप	गति और लय में तीव्रता लाना, तान और अन्य तकनीकों के साथ प्रस्तुति को समृद्ध करना

3. आधुनिक आलाप में तकनीकी पहलू

- स्वर विस्तार: स्वर को अधिक विस्तार और गहराई से पेश करना।
- आवाज की विविधता: आवाज़ के विभिन्न रंग (टोन, वोल्युम, पिच) का प्रयोग।

- प्रयोगात्मकता: नए स्वर और अलंकारों का संयोजन।
- इंटरैक्शन: कभी-कभी संगीतकारों के बीच संवादात्मक प्रस्तुति।

---

4. आधुनिक आलाप और पारंपरिक आलाप में अंतर

पहलू	पारंपरिक आलाप	आधुनिक आलाप
ताल और लय	आमतौर पर बिना ताल	हल्का ताल या लय के संकेत
अलंकार और सजावट	सीमित अलंकार	अधिक अलंकार और सजावट
गति	धीरे-धीरे स्थिर गति	गति में परिवर्तन, धीमा से तेज
संगीत शैलियों का प्रभाव	शुद्ध शास्त्रीय	विभिन्न शैलियों का मिश्रण
प्रस्तुति शैली	औपचारिक और शास्त्रीय	प्रयोगात्मक, खुली और संवादात्मक

---

5. महत्त्व

- राग की विविध अभिव्यक्ति
- श्रोता की रुचि बनाए रखना
- कलाकार की तकनीकी क्षमता प्रदर्शित करना
- शास्त्रीय संगीत में नवाचार और प्रयोग

राग में वादी और संवादी का महत्त्व

1. वाड़ी (Vadi)

- वाड़ी राग का सबसे प्रमुख स्वर होता है।
- इसे राग का मुख्य स्वर या राजा स्वर भी कहा जाता है।
- वाड़ी स्वर पर अधिक जोर दिया जाता है, और यह राग के भाव और पहचान को निर्धारित करता है।
- वाड़ी स्वर राग के आरोह-अवरोह में केंद्र बिंदु की तरह होता है।

महत्त्व:

- राग की पहचान में वाड़ी स्वर सबसे अहम होता है।
- वाड़ी स्वर के आसपास राग का मुख्य भाव विकसित होता है।
- संगीतकार वाड़ी स्वर पर अधिक समय और अभिव्यक्ति देते हैं।

2. संवादी (Samvadi)

- संवादी राग का दूसरा प्रमुख स्वर होता है।
- इसे वाड़ी का सहयोगी या मंत्री स्वर कहा जाता है।
- संवादी स्वर वाड़ी से आमतौर पर चौथे या पांचवें स्वर की दूरी पर होता है।
- संवादी स्वर से राग का संतुलन और गहराई बढ़ती है।

महत्त्व:

- राग में संतुलन बनाता है।
- वाड़ी और संवादी के बीच संवाद राग के भाव को मजबूत करता है।
- संवादी स्वर राग के रूप और रंग को निखारता है।

3. वाड़ी-संवादी का तालमेल

- वाड़ी और संवादी स्वरों के बीच की दूरी और संवाद राग की ध्वनि सौंदर्य और भावना को उभारते हैं।
- ये दोनों स्वरों पर ध्यान केंद्रित करके कलाकार राग को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करता है।

4. उदाहरण

राग	वाड़ी स्वर	संवादी स्वर
भैरव	सा	म
यमन	ग	नि
मल्हार	ध	रे
भूपाली	सा	प

सारांश

स्वर	भूमिका
वाड़ी	राग का प्रमुख, मुख्य भाव
संवादी	वाड़ी का सहयोगी, संतुलन और गहराई

राग में वरजित स्वर (Varjit Swar) क्या है ?

1. परिभाषा:

- वरजित स्वर वे स्वर होते हैं जिन्हें किसी विशेष राग में उपयोग नहीं किया जाता है।
- ये स्वर उस राग के आरोह (चढ़ाव) या अवरोह (उतराव) में सम्मिलित नहीं होते।
- वरजित स्वरों की अनुपस्थिति से राग का स्वरूप, पहचान और विशेषता स्पष्ट होती है।

2. वरजित स्वर का महत्त्व:

- राग की विशिष्टता: किसी राग में कौन से स्वर गायब हैं, यह राग की अलग पहचान बनाता है।
- भाव और रंगत: वरजित स्वर न होने से राग की भावना और मूड पर प्रभाव पड़ता है।
- राग की संरचना: आरोह-अवरोह में स्वरों का चुनाव राग के स्वरूप को परिभाषित करता है।
- संगीत की शुद्धता: वरजित स्वर से राग की शुद्धता और स्वच्छता बनी रहती है।

3. उदाहरण:

- राग भूपाली में स्वर सा, रे, ग, प, ध होते हैं, जबकि मा, नि स्वर वरजित हैं।
- राग यमन में नि और मा होते हैं, लेकिन राग के स्वर संयोजन में कुछ स्वरों का उपयोग नहीं होता।

4. वरजित स्वर कैसे पहचाने?

- किसी राग के आरोह और अवरोह में जो स्वर शामिल नहीं होते, वे वरजित स्वर होते हैं।
- वरजित स्वर को गाने या बजाने से राग की शुद्धता प्रभावित होती है।

सारांश:

तत्व	विवरण
वरजित स्वर	राग में जिन स्वरों का प्रयोग नहीं होता
भूमिका	राग की पहचान और विशेषता बनाना
प्रभाव	राग के भाव, स्वरूप और शुद्धता पर प्रभाव

उत्तरि और दक्षिणी पद्धति के स्वर

1. उत्तरि पद्धति (Uttari Paddhati)

- इसे उत्तर भारत की शास्त्रीय संगीत परंपरा से जोड़ा जाता है।
- इसमें रागों के स्वर हल्के और धीरे-धीरे स्वर की प्रगति के साथ प्रस्तुत किए जाते हैं।
- आरोह-अवरोह में स्वर अधिक स्पष्ट और क्रमवार होते हैं।
- स्वरांकन में अधिक विस्तार और सजावट होती है।
- यह पद्धति शास्त्रीय गायक और वादक ज्यादा अपनाते हैं।

स्वर स्वरूप (उदाहरण):

- सा, रे, ग, म, प, ध, नि (सर्व स्वरों का प्रयोग)
- आरोह अवरोह स्पष्ट एवं व्यवस्थित

2. दक्षिणी पद्धति (Dakshini Paddhati)

- इसे दक्षिण भारत की शास्त्रीय संगीत परंपरा (Carnatic Music) के स्वरूप से जोड़ते हैं, लेकिन कुछ क्षेत्रों में हिंदुस्तानी संगीत में भी यह प्रयोग होता है।
- इस पद्धति में स्वर के प्रयोग में कुछ भेद होते हैं, स्वर अधिक तीव्र और संक्षिप्त हो सकते हैं।
- स्वर आरोह-अवरोह में कुछ स्वर विशेष रूप से अधिक या कम उपयोग होते हैं।
- संगीत की अभिव्यक्ति में लय और ताल का अधिक महत्व होता है।

- स्वर अधिक तीव्र, लयबद्ध और भावपूर्ण होते हैं।

  स्वर स्वरूप (उदाहरण):

- कुछ स्वर छूट सकते हैं (वरजित स्वर)
- लय और ताल के साथ स्वर प्रस्तुति

सारांश तालिका

पद्धति	विशेषताएँ	स्वर प्रस्तुति
उत्तरि पद्धति	उत्तर भारत की पारंपरिक शैली	स्वर क्रमवार, विस्तार से
दक्षिणी पद्धति	दक्षिण भारत की शैली या उसका प्रभाव	स्वर तीव्र, लयबद्ध, भावपूर्ण

नोट:

- हिंदुस्तानी संगीत में यह पद्धतियाँ स्वरों के चयन, प्रस्तुति और अलंकारों के उपयोग में भिन्नता उत्पन्न करती हैं।
- दोनों पद्धतियाँ संगीत की विभिन्न भावनात्मक और तकनीकी आवश्यकताओं को पूरा करती हैं।

IJCRT

उत्तरि और दक्षिणी पद्धति में स्वर और प्रस्तुति का विस्तार

1. उत्तरि पद्धति की विशेषताएँ

- **स्वर संरचना:**

  आरोह- अवरोह में स्वरों का स्पष्ट क्रम होता है। जैसे आरोह में धीरे-धीरे सा-रे-ग-म-प-ध-नि-सा चढ़ाई जाती है, और अवरोह में उल्टा क्रम।

- **स्वर सजावट:**

  मुरकी, मीड़, खटका जैसे अलंकारों का भरपूर प्रयोग होता है।

- **अलाप और बंदिश:**

  आलाप में स्वर विस्तार के साथ भावपूर्ण प्रस्तुति होती है। बंदिश (ठोस रचना) में ताल के साथ स्वरों का लयबद्ध समायोजन।

- **राग की पहचान:**

  वाड़ी और संवादी स्वर पर विशेष जोर दिया जाता है।

- **उदाहरण:**

  राग यमन, भैरव, भूपाली आदि में यह पद्धति प्रमुख है।

2. दक्षिणी पद्धति की विशेषताएँ

- स्वर संरचना:

  कर्नाटिक संगीत में 72 मूल मेळakarta स्वर समूह होते हैं, जिनसे विभिन्न राग बनते हैं। यहाँ स्वर संयोजन में अधिक नियम होते हैं।

- ताल और लय:

  ताल के साथ स्वर की प्रस्तुति अधिक कठोर और व्यवस्थित होती है।

- प्रस्तुति शैली:

  दक्षिणी शैली में तान और त्वरित अलंकारों के स्थान पर भाव और लय पर अधिक ध्यान।

- अलंकारों का भेद:

  गमक और जोरदार अलंकार जैसे विशेषताएँ होती हैं।

- उदाहरण:

  राग हंसध्वनि, करहेरि, कौमारि आदि।

3. स्वरों के प्रकार और उपयोग

स्वर प्रकार	उत्तरि पद्धति उपयोग	दक्षिणी पद्धति उपयोग
शुद्ध स्वर	व्यापक रूप से उपयोग होता है	नियमबद्ध एवं कठोर उपयोग
विकृत स्वर	अलंकारों में प्रयुक्त	अधिक गमक के साथ प्रयोग
वरजित स्वर	राग के आधार पर निर्दिष्ट	स्वर संयोजन में सख्ती

4. अलंकार और सजावट

- उत्तरि पद्धति:

  मुरकी, खटका, मीड़, गमक की सजावट।

- दक्षिणी पद्धति:

  गमक (विशिष्ट जोरदार) और जलंधर (स्वर की लहर) का प्रयोग।

5. प्रस्तुति का भाव

- उत्तरि पद्धति: भावात्मक, विस्तारपूर्ण और लय के साथ।
- दक्षिणी पद्धति: सटीक, तीव्र और तालबद्ध।

राग में तीव्र स्वर, कोमल स्वर और शुद्ध स्वर का अंतर

1. शुद्ध स्वर (Shuddh Swar)

- ये स्वर अपने मूल और सामान्य स्वरूप में होते हैं।
- सप्तक के सात स्वरों में से सा (षड्ज), रे (ऋषभ), ग (गांधार), म (मध्यम), प (पंचम), ध (धैवत), नि (निषाद) में से जो स्वर बिना किसी बदलाव के होते हैं, उन्हें शुद्ध स्वर कहते हैं।
- शुद्ध स्वर की ध्वनि स्पष्ट और सामान्य होती है।

उदाहरण:

सा, रे (शुद्ध), ग (शुद्ध), म (शुद्ध), प, ध (शुद्ध), नि (शुद्ध)

2. कोमल स्वर (Komal Swar)

- कोमल स्वर वे स्वर होते हैं जो शुद्ध स्वर से आधा स्वर (अर्ध-स्वर) नीचे होते हैं।
- ये स्वर शुद्ध स्वर की तुलना में थोड़ा नीचे (flat) होते हैं।
- केवल रे, ग, ध, नि स्वर ही कोमल हो सकते हैं; सा, प, म स्वर कोमल नहीं होते।

उदाहरण:

- कोमल रे (Re♭)

- कोमल ग (Ga♭)
- कोमल ध (Dha♭)
- कोमल नि (Ni♭)

3. तीव्र स्वर (Teevr Swar)

- तीव्र स्वर वे स्वर होते हैं जो शुद्ध स्वर से आधा स्वर ऊपर होते हैं।
- केवल मध्यम (म) स्वर ही तीव्र हो सकता है।
- तीव्र स्वर को "#" या □तेज□ स्वर भी कहा जाता है।

उदाहरण:

- तीव्र म (M#)

सारांश तालिका

स्वर प्रकार	स्वर कौन-कौन से हो सकते हैं	स्वर की स्थिति	स्वर की ध्वनि
शुद्ध स्वर	सा, रे, ग, म, प, ध, नि	मूल स्वर	सामान्य, स्पष्ट स्वर
कोमल स्वर	रे, ग, ध, नि	शुद्ध स्वर से आधा स्वर नीचे	थोड़ा नीचे (flat)
तीव्र स्वर	केवल म	शुद्ध म से आधा स्वर ऊपर	थोड़ा ऊपर (sharp)

उदाहरण से समझें

- शुद्ध स्वर — सा, रे, ग, म, प, ध, नि (सामान्य स्वर)
- कोमल स्वर — रे♭, ग♭, ध♭, नि♭
- तीव्र स्वर — म#

तीव्र, कोमल और शुद्ध स्वरों का राग में विस्तार

1. शुद्ध स्वर का महत्व

- शुद्ध स्वर राग का मूल आधार होते हैं।
- इनसे राग की स्पष्टता और स्थिरता आती है।
- अधिकांश रागों में शुद्ध स्वर प्रमुख होते हैं।
- शुद्ध स्वर भाव को स्थिर और सरल बनाते हैं।

2. कोमल स्वर का महत्व

- कोमल स्वर राग में मृदुता, उदासी, और भावुकता उत्पन्न करते हैं।
- इनका प्रयोग राग को अधिक भावपूर्ण और संवेदनशील बनाता है।
- कोमल स्वर का सही उपयोग राग की गंभीरता और गहराई बढ़ाता है।
- जैसे राग भैरव, यमन में कोमल स्वर का महत्व होता है।

3. तीव्र स्वर का महत्व

- तीव्र स्वर राग को तेजस्वी, उज्जवल और जीवंत बनाते हैं।
- ये स्वर राग में उत्साह और ऊर्जा का संचार करते हैं।
- तीव्र स्वर के बिना कई रागों का स्वरूप अधूरा लगता है।
- जैसे राग यमन का तीव्र म (M#) बहुत महत्वपूर्ण है।

4. तीनों स्वर का मेल

- किसी राग में शुद्ध, कोमल और तीव्र स्वरों का संयोजन उस राग की भिन्न-भिन्न भावना को जन्म देता है।
- सही मात्रा और स्थान पर इन स्वरों का प्रयोग राग को प्रभावशाली बनाता है।
- स्वर परिवर्तन राग की अद्वितीयता और रंगत तय करता है।

5. स्वरों के उदाहरण और प्रभाव

स्वर प्रकार	प्रभाव और भावना	रागों के उदाहरण
शुद्ध स्वर	सरलता, स्पष्टता, स्थिरता	भूपाली, केदार
कोमल स्वर	मृदुता, उदासी, शोक, गंभीरता	भैरव, दरबारी कान्हड़ा
तीव्र स्वर	उज्ज्वलता, तेजस्विता, उत्साह	यमन, बिहाग

6. रागों में स्वर के प्रकार का चयन

- प्रत्येक राग के आरोह-अवरोह में स्वर का चयन होता है — कोमल, तीव्र या शुद्ध।
- स्वर के चयन से ही राग की पहचान, मूड और समय निर्धारित होता है।

सुंदर गायक के गुण

1. स्वर की शुद्धता (Sur ki Shuddhata)

- गायक को अपने स्वर की सही पहचान और नियंत्रण होना चाहिए।
- स्वर साफ, स्पष्ट और शुद्ध होना चाहिए ताकि सुनने वाले को आनंद मिले।

2. ताल की पकड़ (Taal ki Pakad)

- सही ताल पर गायन करना आवश्यक है।
- ताल के अनुसार स्वर और लय का मेल गायक की कला को निखारता है।

3. स्वर विस्तार (Sur Vistaar)

- गायक को स्वर को धीरे-धीरे विस्तार से गाने की कला होनी चाहिए।
- आलाप, मीड़, गमक आदि अलंकारों का सही प्रयोग हो।

4. भाव की अभिव्यक्ति (Bhav ki Abhivyakti)

- गायक को राग के भाव को दर्शाने की क्षमता होनी चाहिए।
- सुनने वालों को भावानुभूति कराने की कला।

5. सांगीतिक ज्ञान (Sangeetik Gyaan)

- गायक को राग, ताल, स्वर, अलंकार आदि का गहरा ज्ञान होना चाहिए।
- संगीत के नियमों और पद्धतियों की समझ।

6. धैर्य और अभ्यास (Dhary aur Abhyas)

- निरंतर अभ्यास और धैर्य गायक की सफलता के लिए अनिवार्य हैं।

7. संतुलित आवाज (Santulit Awaaz)

- आवाज का मधुर और संतुलित होना जरूरी है। न तो तीखा और न बहुत धीमा।

8. प्रस्तुति कौशल (Prastuti Kaushal)

- गायक को मंच पर आत्मविश्वास और प्रस्तुति का अच्छा तरीका आना चाहिए।
- श्रोता के साथ जुड़ाव बनाना।

9. राग और ताल की समझ (Raag aur Taal ki Samajh)

- राग की पहचान और उसमें सही ताल की पकड़।

10. अनुभव और लगन (Anubhav aur Lagan)

- संगीत के प्रति समर्पण और अनुभव से गायक की कला निखरती है।

इन गुणों से एक गायक न केवल तकनीकी रूप से अच्छा होता है बल्कि अपनी आवाज़ और भाव के जरिए श्रोता के मन को भी छू पाता है।

सुंदर गायक के अतिरिक्त गुण और खास बातें :-

11. शुद्ध उच्चारण (Clear Pronunciation)

- गीत के शब्दों का स्पष्ट और सही उच्चारण होना चाहिए।
- जिससे श्रोता को शब्दों का अर्थ समझ आए और प्रस्तुति प्रभावशाली बने।

12. स्वर संयोजन (Swara Sanyojan)

- स्वर और ताल का सही मेल।
- स्वर को ऐसे जोड़ना कि राग की आत्मा प्रकट हो।

13. स्वर नियंत्रण (Sur Niyantran)

- स्वर की तीव्रता, कमज़ोरी या ऊंचाई को नियंत्रित करने की क्षमता।
- जिससे गायक किसी भी शैली में आसानी से गा सके।

14. भावानुकूल improvisation

- गायक को राग के भाव के अनुसार आलाप, तान, और अन्य अलंकारों का स्वतः और सटीक improvisation आना चाहिए।

15. श्रोता के साथ जुड़ाव (Audience Connect)

- गायक को अपनी प्रस्तुति में श्रोता से भावनात्मक जुड़ाव बनाना आना चाहिए।
- यह माहौल और आनंद दोनों को बढ़ाता है।

16. अच्छी सांस नियंत्रण (Breath Control)

- लंबे और सुगम स्वरगान के लिए सांस का नियंत्रण आवश्यक।
- जिससे स्वर निरंतर और बिना टूटे गाए जा सकें।

17. संगीत की आत्मा समझना (Understanding the Soul of Music)

- गायक केवल स्वर गाने वाला नहीं होता, उसे संगीत की गहराई और संदेश समझना चाहिए।

18. नवाचार और मौलिकता (Innovation and Originality)

- गायक की अपनी एक अलग शैली और मौलिकता होनी चाहिए, जिससे वह भीड़ से अलग दिखे।

19. सहजता और स्वाभाविकता (Ease and Naturalness)

- प्रस्तुति में ऐसा लगे कि संगीत सहजता से निकल रहा हो, न कि जबरदस्ती।

20. सहयोगी कला (Collaborative Skills)

- संगीत के अन्य कलाकारों (वादक, ताल वादक) के साथ तालमेल बिठाना।

इन गुणों के साथ-साथ गायक का व्यक्तित्व, संगीत के प्रति लगाव और निरंतर सीखने की इच्छा भी महत्वपूर्ण होती है।

रागों पर आधारित कुछ प्रसिद्ध फिल्मी गीत

1. राग भैरवी

- गीत: “ऐ मेरे वतन के लोगों” — लता मंगेशकर
- फिल्म: कोई नहीं (स्वतंत्रता दिवस के लिए)
- भाव: गंभीर और भावुकता से भरा गीत।

---

2. राग यमन

- गीत: “प्यार किया तो डरना क्या” — लता मंगेशकर
- फिल्म: मुगल-ए-आज़म
- यह राग शाम के समय गाया जाता है, और इसमें एक शांति व मिठास होती है।

---

3. राग दरबारी कान्हड़ा

- गीत: “चली आई तू जहां से” — आशा भोसले
- फिल्म: प्यासा
- इसमें कोमल स्वर और गंभीरता है।

---

4. राग भूपाली

- गीत: “मधुबन में राधिका नाचे रे” — लता मंगेशकर
- फिल्म: संगीत
- राग भूपाली का उपयोग उत्साह और भक्ति भाव के लिए होता है।

---

5. राग मियाँ की मालकौंस

- गीत: “साँवरे रे साँवरे” — किशोर कुमार
- फिल्म: परिवार
- इसमें गमक और मीड़ की झलक मिलती है।

---

6. राग भीमपलासी

- गीत: “तुमको मैं दिन-ब-दिन बताता हूँ” — मोहम्मद रफी
- फिल्म: आन
- इसका मूड उदासी और प्रेम मिश्रित होता है।

---

7. राग दुर्गा

- गीत: “जय जयकारा ओढ़ के” — लता मंगेशकर
- फिल्म: मुगल-ए-आज़म
- शक्ति और उत्साह से भरपूर राग।

---

8. राग कांधारी

- गीत: “आएगा आने वाला” — मोहम्मद रफी
- फिल्म: मिलन
- तेज़ और उत्साह से भरा गीत।

---

9. राग साहेर

- गीत: “दिल जलता है तो जलने दे” — लता मंगेशकर
- फिल्म: राम और श्याम
- उदासी और ग़म के भाव के लिए उपयुक्त।

---

10. राग कल्याण

- गीत: "ऐ मेरे दिल तू बता ज़रा" — मोहम्मद रफी
- फिल्म: संगीत
- राग कल्याण की मिठास और शांति का एहसास।

---

11. राग भीमपलासी

- गीत: *"तुमको मेरी कसम"* — लता मंगेशकर
- फिल्म: *प्यार का मतलब*
- उदासी और प्रेम के मिश्रण के लिए उपयुक्त।

---

12. राग झिंझोटी

- गीत: *"कोई चलता पेड़ के नीचे"* — किशोर कुमार
- फिल्म: *छोटा भाई*
- हल्का-फुल्का और हंसमुख राग।

---

13. राग शुद्ध सरस्वती

- गीत: *"प्रेम की नगरी बसा के"* — लता मंगेशकर
- फिल्म: *संगीत*
- पवित्रता और शुद्धता की भावना।

---

14. राग मियाँ की मालकौंस

- गीत: *"ये रात ये चाँदनी फिर कहाँ"* — किशोर कुमार
- फिल्म: *जवानी दीवानी*
- रोमांटिक और मधुर।

---

15. राग भैरव

- गीत: *"पिया तोसे नैना लागे रे"* — लता मंगेशकर
- फिल्म: *राजा हिन्दुस्तानी*
- गंभीरता और भक्ति के लिए प्रसिद्ध।

फिल्मी संगीत में रागों का महत्व

- राग की मदद से गीत में **भाव और मूड** को गहराई दी जाती है।
- राग के स्वर और अलंकार फिल्मी गीतों को **शास्त्रीय संगीत की गहराई** देते हैं।
- रागों का सही चयन गीत की **समय, स्थान और भावना** के अनुसार होता है।
- कई बार गायक और संगीतकार राग के स्वरूप में थोड़ा-बहुत बदलाव कर फिल्मी संगीत को **लोकप्रिय और सहज** बनाते हैं।

संगीत की मूल्यांकन की विधि

संगीत का मूल्यांकन एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें कई पहलुओं पर विचार किया जाता है। यह सिर्फ सही नोट बजाने से कहीं अधिक है, इसमें संगीत की आत्मा को समझना और उसे व्यक्त करना भी शामिल है। यहां संगीत के मूल्यांकन की कुछ प्रमुख विधियाँ और विचार बिंदु दिए गए हैं:

1. प्रदर्शन मूल्यांकन (Performance Assessment):

- रुब्रिक्स (Rubrics): यह मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण उपकरण है, जो प्रदर्शन के विभिन्न पहलुओं को मापने के लिए एक स्पष्ट और पारदर्शी ढाँचा प्रदान करता है। रुब्रिक्स में आमतौर पर निम्नलिखित मानदंड शामिल होते हैं:
    - तकनीकी दक्षता (Technical Proficiency): क्या कलाकार सही नोट, ताल और लय का पालन कर रहा है? वाद्य यंत्र पर उसका नियंत्रण कैसा है?

- भावनात्मकता/अभिव्यक्ति (Musicality/Expression): क्या कलाकार संगीत की भावना और अर्थ को व्यक्त कर पा रहा है? गतिशीलता (dynamics), वाक्यांश (phrasing) और अलंकरण (ornamentation) का उपयोग कैसे किया जाता है?
- मंचीय उपस्थिति (Stage Presence): कलाकार का आत्मविश्वास, हावभाव और दर्शकों के साथ जुड़ाव कैसा है?
- संचार (Communication): क्या कलाकार संगीत के माध्यम से दर्शकों तक भावना और अर्थ पहुंचा पा रहा है?
- संगतकार या कलाकारों के समूह के साथ तालमेल (Interaction with accompanist or ensemble): यदि समूह में प्रदर्शन हो रहा है, तो अन्य कलाकारों के साथ तालमेल और सहयोग कैसा है?

- सामूहिक प्रदर्शन (Collective Performance): टीम वर्क और सहयोग कौशल का आकलन करने के लिए सामूहिक प्रदर्शनों को शामिल करना महत्वपूर्ण है।
- अभिलेखन और स्व-मूल्यांकन (Recording and Self-evaluation): कलाकार अपने प्रदर्शन की ऑडियो/वीडियो रिकॉर्डिंग करके स्वयं का मूल्यांकन कर सकते हैं। इससे उन्हें अपनी खूबियों और कमजोरियों को पहचानने में मदद मिलती है।

2. संगीत की समझ और सराहना (Music Appreciation):

यह संगीत को उसके तत्वों, इतिहास और सांस्कृतिक महत्व का विश्लेषण करके समझना और महत्व देना है। इसमें सक्रिय रूप से सुनना, विभिन्न शैलियों और शैलियों को पहचानना और विभिन्न संगीतकारों और कलाकारों के योगदान को पहचानना शामिल है।

- सक्रिय रूप से सुनना (Active Listening): संगीत पर पूरी तरह से ध्यान केंद्रित करना, पृष्ठभूमि की विकृतियों से बचना ताकि सूक्ष्म बारीकियों को पकड़ा जा सके।
- भावनात्मक जुड़ाव (Emotional Engagement): उन भावनाओं पर विचार करना जो संगीत पैदा करता है और वे पूरे टुकड़े में कैसे बदलते हैं।
- वाद्य यंत्रों की पहचान (Identifying Instruments): विभिन्न वाद्य यंत्रों को पहचानने और समग्र ध्वनि बनाने में उनकी भूमिका को समझना।
- संरचनात्मक सुनना (Structural Listening): संगीत की संरचना का विश्लेषण करना। परिचय (introduction), छंद (verses), और कोरस (chorus) जैसे अनुभागों को पहचानना।

- **संगीत के मौलिक तत्व (Fundamental Elements of Music):**

- राग/स्वर (Pitch): सुर, राग, सामंजस्य, तार, रजिस्टर और रेंज। यह माधुर्य और सामंजस्य को नियंत्रित करता है।
- अवधि/लय (Duration/Rhythm): लय, ताल, गति, मीटर और नोट मान। यह संगीत की गति और प्रवाह को देता है।
- गतिशीलता और अभिव्यंजक तकनीकें (Dynamics & Expressive Techniques): ध्वनि की तीव्रता (जोर से/धीरे), संगीत का मूड, और संगीतकार के इरादे को दोहराने के लिए दिशात्मक विवरण।
- संरचना (Structure): एक संगीत कृति का निर्धारित रूप या क्रम।
- बनावट (Texture): संगीत के समग्र टुकड़े में गति, माधुर्य और सामंजस्य की व्यक्तिगत परतें कितनी "पतली" या "मोटी" हैं।
- टिम्बर/स्वर रंग (Timbre/Tone Colour): विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों या स्वरों की विशिष्ट ध्वनियों का वर्णन करने के लिए विशेषणों का उपयोग करना।

3. शिक्षक और विशेषज्ञ द्वारा मूल्यांकन (Evaluation by Teachers and Experts):

- शिक्षक या विशेषज्ञ छात्रों की क्षमता के अनुसार स्वरों और अलंकारों का अभ्यास कराते हैं।
- वे छात्रों के प्रदर्शन का निरीक्षण करते हैं और उनके तकनीकी कौशल, संगीतमयता, और प्रस्तुति पर प्रतिक्रिया देते हैं।
- मंचीय प्रदर्शन के माध्यम से श्रोताओं द्वारा कलाकार की रचनात्मक कला का परीक्षण किया जाता है, और श्रोता कलाकार के लिए प्रेरणा का स्रोत माने जाते हैं।

4. प्रौद्योगिकी का उपयोग (Use of Technology):

- रिकॉर्डिंग का उपयोग छात्रों को प्रतिक्रिया प्रदान करने और समय के साथ उनकी प्रगति का आकलन करने के लिए किया जा सकता है।
- ऑनलाइन मूल्यांकन उपकरण मूल्यांकन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित कर सकते हैं और छात्रों को तत्काल प्रतिक्रिया प्रदान कर सकते हैं।
- डिजिटल पोर्टफोलियो का उपयोग समय के साथ छात्र की प्रगति को ट्रैक करने और उनकी उपलब्धि की एक व्यापक तस्वीर प्रदान करने के लिए किया जा सकता है।

संक्षेप में, संगीत के मूल्यांकन में तकनीकी पहलुओं, भावनात्मक अभिव्यक्ति, प्रदर्शन कौशल और संगीत की गहरी समझ का संयोजन शामिल है। यह एक सतत प्रक्रिया है जो अभ्यास, आत्म-चिंतन और रचनात्मक प्रतिक्रिया के माध्यम से संगीतकार को बेहतर बनाने में मदद करती है।

"संगीत जनरुचि और उत्तरदायित्व

"संगीत जनरुचि और उत्तरदायित्व" एक महत्वपूर्ण विषय है जो संगीत, समाज और उद्योग के बीच के जटिल संबंधों को दर्शाता है। इसे कई पहलुओं से समझा जा सकता है:

संगीत जनरुचि (Public Interest in Music)

संगीत की जनरुचि से तात्पर्य है कि लोग किस तरह के संगीत को पसंद करते हैं, सुनते हैं और उससे जुड़ते हैं। यह निरंतर बदलती रहती है और कई कारकों से प्रभावित होती है:

- **सांस्कृतिक और सामाजिक रुझान** : विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और सामाजिक आंदोलनों का संगीत की पसंद पर गहरा असर होता है। युवाओं की बदलती प्राथमिकताएं भी इसमें अहम भूमिका निभाती हैं।
- **प्रौद्योगिकी का प्रभाव** : स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया और आसानी से उपलब्ध रिकॉर्डिंग उपकरणों ने संगीत को सुनने, खोजने और साझा करने के तरीके को बदल दिया है। इससे नई शैलियों को लोकप्रियता मिलती है और पुरानी शैलियाँ भी नए सिरे से सामने आती हैं।
- **मीडिया और प्रचार** : रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, और अब डिजिटल मीडिया व इन्फ्लुएंसर्स का संगीत की लोकप्रियता पर सीधा प्रभाव पड़ता है। मार्केटिंग और प्रचार अभियान भी जनरुचि को दिशा दे सकते हैं।
- **कलाकारों का योगदान** : नए और अभिनव कलाकार अपनी अनूठी शैलियों और आवाज़ों से जनरुचि को बदल सकते हैं। पुराने और स्थापित कलाकार भी अपनी निरंतर रचनात्मकता से लोगों का ध्यान बनाए रखते हैं।
- **वैश्विक प्रभाव** : आज की दुनिया में, विभिन्न देशों और संस्कृतियों का संगीत एक-दूसरे को प्रभावित करता है, जिससे नई संकर (hybrid) शैलियाँ विकसित होती हैं और जनरुचि में विविधता आती है।

उत्तरदायित्व (Responsibility)

"उत्तरदायित्व" का अर्थ यह है कि संगीत उद्योग, कलाकार और अन्य हितधारकों की क्या नैतिक और व्यावसायिक जिम्मेदारियाँ हैं, विशेष रूप से जनरुचि को ध्यान में रखते हुए। इसमें कई पहलू शामिल हैं:

1. संगीत उद्योग का उत्तरदायित्व

- **विविधता और समावेशिता** : उद्योग का यह उत्तरदायित्व है कि वह विभिन्न शैलियों, भाषाओं और संस्कृतियों के संगीत को बढ़ावा दे, न कि केवल वही जो तत्काल व्यावसायिक रूप से सफल हो। इससे संगीत परिदृश्य समृद्ध होता है और सभी को अपनी पसंद का संगीत खोजने का अवसर मिलता है।

- **गुणवत्ता बनाए रखना** : केवल लोकप्रिय होने के लिए गुणवत्ता से समझौता न करें। उद्योग को कलात्मकता और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना चाहिए।

- **कलाकारों के अधिकारों की सुरक्षा** : संगीतकारों, गीतकारों, गायकों और निर्माताओं के कॉपीराइट और अन्य बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा करना उद्योग का एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है।

- **सामाजिक प्रभाव** : संगीत का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। उद्योग को ऐसे संगीत को बढ़ावा देने से बचना चाहिए जो घृणा, हिंसा या भेदभाव को बढ़ावा दे।

- **स्वच्छ प्रतिस्पर्धा** : स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के लिए उचित व्यापार प्रथाओं को बनाए रखना और एकाधिकार से बचना भी महत्वपूर्ण है।

2. कलाकारों का उत्तरदायित्व

- **रचनात्मक ईमानदारी** : कलाकारों का उत्तरदायित्व है कि वे अपनी कला के प्रति ईमानदार रहें और केवल जनरुचि का अंधानुकरण न करें। उन्हें नए विचारों और शैलियों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित होना चाहिए।

- **श्रोताओं के प्रति सम्मान** : संगीत के माध्यम से सकारात्मक संदेश देना और ऐसे विषय से बचना जो समाज को नुकसान पहुँचाएँ, एक नैतिक उत्तरदायित्व है।

- **प्रेरणा और प्रभाव** : कलाकार समाज के लिए रोल मॉडल हो सकते हैं। उनका यह उत्तरदायित्व है कि वे अपने संगीत और व्यवहार से सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करें।

3. श्रोताओं और मीडिया का उत्तरदायित्व

- **सक्रिय श्रवण** : श्रोताओं को नई शैलियों और कलाकारों को आज़माने के लिए खुला रहना चाहिए, बजाय इसके कि वे केवल मुख्यधारा के संगीत तक ही सीमित रहें।

- **समर्थन और सराहना** : गुणवत्तापूर्ण संगीत और कलात्मक प्रयासों को पहचानना और उनका समर्थन करना श्रोताओं का भी उत्तरदायित्व है।

- **मीडिया की भूमिका** : मीडिया का उत्तरदायित्व है कि वह केवल लोकप्रिय संगीत ही नहीं, बल्कि विभिन्न प्रकार के संगीत को भी प्रस्तुत करे और उस पर चर्चा करे, जिससे जनरुचि में विविधता आ सके।

निष्कर्ष

रूप में, संगीत जनरुचि और उत्तरदायित्व के बीच एक गतिशील संबंध है। जबकि जनरुचि यह निर्धारित करती है कि क्या लोकप्रिय है, उद्योग और कलाकारों का उत्तरदायित्व है कि वे गुणवत्ता, विविधता और नैतिक मूल्यों को बनाए रखें, ताकि संगीत कला के रूप में समृद्ध होता रहे और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाले।

ललित कलाओं में संगीत का स्थान

ललित कलाएँ वे कलाएँ हैं जिनका मुख्य उद्देश्य सौंदर्य की अभिव्यक्ति और मानव मन को आनंद प्रदान करना है। इनमें उपयोगिता या कार्यात्मकता गौण होती है। ये कलाएँ मानव की भावनाओं, विचारों और कल्पनाओं को विभिन्न माध्यमों से प्रस्तुत करती हैं।

ललित कलाओं के प्रमुख प्रकार

परंपरागत रूप से ललित कलाओं में मुख्य रूप से पाँच कलाओं को शामिल किया जाता है:

1. **चित्रकला (Painting)** : रंगों और रेखाओं के माध्यम से दृश्य भावनाओं को व्यक्त करना।
2. **मूर्तिकला (Sculpture)** : पत्थर, धातु, मिट्टी आदि से त्रि-आयामी (3D) आकृतियों का निर्माण।
3. **वास्तुकला (Architecture)** : भवनों और संरचनाओं का सौंदर्यपूर्ण और कार्यात्मक डिज़ाइन।
4. **काव्यकला/साहित्य (Poetry/Literature)** : शब्दों और भाषा के माध्यम से भावनाओं, विचारों और कहानियों को व्यक्त करना।
5. **संगीत (Music)** : सुर, ताल और लय के संयोजन से ध्वनि के माध्यम से भावनाओं और विचारों को व्यक्त करना।

ललित कलाओं में संगीत का स्थान

ललित कलाओं में संगीत का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और कई मायनों में सर्वोपरि माना जाता है। इसके कई कारण हैं:

- **अत्यधिक भावपूर्ण माध्यम** : संगीत भावनाओं को व्यक्त करने का एक सबसे सशक्त और सीधा माध्यम है। यह सीधे मन को प्रभावित करता है और बिना किसी भाषा या भौगोलिक बाधा के भावनाओं को जगा सकता है। एक ही संगीत आनंद, दुःख, उत्साह, शांति आदि अनेक भावों को उत्पन्न कर सकता है।

- **सार्वभौमिक अपील** : संगीत की भाषा सार्वभौमिक है। यह किसी विशेष भाषा या संस्कृति तक सीमित नहीं है। विश्व के किसी भी कोने में लोग संगीत को सुनकर उससे जुड़ सकते हैं, भले ही वे उसके बोल न समझें।

- **कम स्थूल उपकरण** : चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला के लिए भौतिक उपकरण और सामग्री (जैसे रंग, पत्थर, ईंट) की आवश्यकता होती है। जबकि संगीत का आधार मुख्य रूप से ध्वनि (नाद) है, जिसे उत्पन्न करने के लिए अपेक्षाकृत कम या सूक्ष्म उपकरणों की आवश्यकता होती है (या कभी-कभी केवल मानव कंठ)।

- **मन पर सीधा प्रभाव** : संगीत में मन को शांत करने, ऊर्जावान बनाने, एकाग्रता बढ़ाने और तनाव कम करने की अद्भुत शक्ति होती है। यह मनुष्य के अवचेतन मन पर गहरा प्रभाव डालता है।

- **अन्य कलाओं का पूरक** : संगीत अक्सर नृत्य (जिसमें लय और ताल महत्वपूर्ण है), नाट्य (जिसमें पार्श्व संगीत भावनाओं को बढ़ाता है) और यहाँ तक कि काव्य (गाने) और फिल्म (पार्श्व संगीत) जैसी अन्य कलाओं का पूरक होता है। संगीत के बिना कई प्रदर्शन कलाएँ अधूरी मानी जाती हैं।

- **गतिशीलता और अमूर्तता** : संगीत समय के साथ विकसित होता है, यह एक गतिशील कला है। यह अमूर्त है, इसे देखा या छुआ नहीं जा सकता, केवल अनुभव किया जा सकता है। इसकी यह अमूर्त प्रकृति इसे और भी रहस्यमय और शक्तिशाली बनाती है।

- मनुष्यों के साथ पशु-पक्षियों पर भी प्रभाव : यह संगीत की एक अनूठी विशेषता है कि इसका प्रभाव केवल मनुष्यों पर ही नहीं, बल्कि पशु-पक्षियों पर भी देखा जा सकता है, जो इसकी सार्वभौमिकता और गहरे प्रभाव को दर्शाता है।

संक्षेप में, संगीत ललित कलाओं में एक विशेष स्थान रखता है क्योंकि यह भावनाओं को गहराई से छूने की क्षमता रखता है, सार्वभौमिक है, और न्यूनतम भौतिक साधनों के साथ अधिकतम प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। यह मानव अनुभव का एक अभिन्न अंग है और सौंदर्य, शांति और आनंद की अद्भुत अनुभूति प्रदान करता है।

शास्त्रीय संगीत और सुगम संगीत

भारतीय संगीत मुख्य रूप से दो प्रमुख धाराओं में विभाजित है: शास्त्रीय संगीत और सुगम संगीत। ये दोनों शैलियाँ अपनी-अपनी विशेषताओं, नियमों और श्रोता वर्ग के साथ भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

शास्त्रीय संगीत (Classical Music)

शास्त्रीय संगीत, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, शास्त्रों और निर्धारित नियमों पर आधारित होता है। यह भारतीय संगीत की सबसे प्राचीन और शुद्धतम विधा मानी जाती है।

- **नियमबद्धता** : शास्त्रीय संगीत का आधार राग और ताल हैं। हर राग के अपने कठोर नियम होते हैं, जैसे कौन से स्वर इस्तेमाल किए जाएंगे, उनका आरोह-अवरोह (ऊपर-नीचे जाने का क्रम) क्या होगा, और उनमें लगने वाली सूक्ष्म हरकतें (जैसे मींड, गमक, मुर्की) कैसी होंगी। ताल भी अपनी निश्चित मात्राओं और बोलों के साथ बंधा होता है।

- **कलात्मकता और शुद्धता** : इसका मुख्य उद्देश्य कलात्मक शुद्धता और राग के मूल स्वरूप को प्रस्तुत करना होता है। इसमें स्वरों और उनके जटिल संयोजनों पर विशेष ध्यान दिया जाता है, न कि शब्दों पर।

- **गहराई और विस्तार** : शास्त्रीय संगीत में एक ही राग को लंबे समय तक विस्तार से गाया या बजाया जाता है, जिसमें कलाकार अपनी कल्पना और रियाज़ के बल पर राग के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत करता है। इसमें आलाप, तान, सरगम, बंदिश आदि का प्रयोग होता है।

- **साधना और प्रशिक्षण** : इसे सीखने और प्रस्तुत करने के लिए वर्षों के कठोर रियाज़ और गुरु-शिष्य परंपरा का पालन करना होता है। यह एक गहन साधना की मांग करता है।

- **प्रमुख शैलियाँ** : भारतीय शास्त्रीय संगीत की दो मुख्य शैलियाँ हैं:
  - हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत: यह उत्तर भारत में प्रचलित है, जिसमें ख्याल, ध्रुपद, धमार, तराना और ठुमरी जैसी गायन शैलियाँ प्रमुख हैं।
  - कर्नाटक शास्त्रीय संगीत: यह दक्षिण भारत में प्रचलित है, जिसमें कृति, वर्णम, तिल्लाना आदि शैलियाँ प्रमुख हैं।
- श्रोता वर्ग: इसे समझने और उसका पूर्ण आनंद लेने के लिए अक्सर संगीत के मूलभूत सिद्धांतों और रागों के ज्ञान की आवश्यकता होती है। इसलिए इसका श्रोता वर्ग अपेक्षाकृत कम होता है।

सुगम संगीत)Light Music)

सुगम संगीत वह संगीत है जिसे सहजता से सीखा, गाया और समझा जा सके, और जो लोकप्रियता पर अधिक केंद्रित होता है। यह शास्त्रीय संगीत के कठोर नियमों से थोड़ा हटकर होता है।

- **सरलता और भावप्रधानता** : सुगम संगीत का मुख्य उद्देश्य भावों और शब्दों को सरल और सीधे तरीके से व्यक्त करना है। इसमें नियमों का पालन उतना कठोर नहीं होता, और कलाकार को थोड़ी स्वतंत्रता मिलती है।
- **लोकप्रियता** : यह आम जनता के बीच अधिक लोकप्रिय होता है क्योंकि इसकी धुनें आसानी से याद रखी जा सकती हैं और इसका उद्देश्य मनोरंजन होता है।
- **कम नियमों की पाबंदी** : यद्यपि सुगम संगीत में भी रागों और तालों का प्रयोग होता है, पर इनमें शास्त्रीय संगीत जितनी कड़ाई नहीं होती। नियमों में थोड़ी ढील दी जाती है ताकि संगीत अधिक सुगम और आकर्षक बन सके।
- **विविधता** : सुगम संगीत में विभिन्न प्रकार की शैलियाँ शामिल हैं, जैसे:
    - फ़िल्मी गीत (Bollywood Songs): भारतीय सुगम संगीत का सबसे बड़ा हिस्सा।
    - भजन और भक्ति संगीत (Devotional Music): धार्मिक और आध्यात्मिक भावना से ओत-प्रोत गीत।
    - ग़ज़ल (Ghazal): उर्दू कविता पर आधारित भावपूर्ण गायन शैली।
    - लोकगीत (Folk Music): क्षेत्रीय परंपराओं और संस्कृति से जुड़े गीत।
    - नज़्म और गीत (Nazm and Geet): आधुनिक काव्य पर आधारित गायन।

- श्रोता वर्ग: इसका श्रोता वर्ग बहुत व्यापक होता है, क्योंकि इसे समझने के लिए किसी विशेष ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती। यह सीधे दिल को छूता है।

सुगम संगीत और शास्त्रीय संगीत में मुख्य अंतर

विशेषता	शास्त्रीय संगीत	सुगम संगीत
आधार	कठोर **शास्त्रों, रागों और तालों** के नियमों पर आधारित।	**भाव, बोल (शब्द) और धुन** पर अधिक केंद्रित; नियमों में ढील।
उद्देश्य	कलात्मक शुद्धता, राग का विस्तार, गहन साधना।	मनोरंजन, भावनाओं की सीधी अभिव्यक्ति, लोकप्रियता।
गहराई	अत्यधिक गहन, एक राग के विभिन्न पहलुओं का विस्तार।	अपेक्षाकृत सरल, संक्षिप्त और त्वरित प्रभाव वाला।
सीखना	वर्षों की कठिन साधना और गुरु-शिष्य परंपरा की आवश्यकता।	सीखने में अपेक्षाकृत आसान, किंतु अच्छी गायकी के लिए रियाज़ आवश्यक।
उदाहरण	ध्रुपद, ख्याल, कर्नाटक कृति।	फ़िल्मी गीत, भजन, ग़ज़ल, लोकगीत, पॉप संगीत।
श्रोता वर्ग	अपेक्षाकृत कम, संगीत के जानकार।	अत्यंत व्यापक, हर वर्ग के श्रोता।

दोनों ही शैलियाँ भारतीय संगीत की समृद्ध परंपरा का हिस्सा हैं और उनका अपना महत्व है। जहाँ शास्त्रीय संगीत अनुशासन और कलात्मक गहराई का प्रतीक है, वहीं सुगम संगीत लोगों के जीवन में आसानी से घुलमिल जाता है और उन्हें त्वरित आनंद प्रदान करता है।

गायन के घराने

गायन के घराने (Gharanas of Gayaki) भारतीय शास्त्रीय संगीत, विशेषकर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की एक अनूठी और महत्वपूर्ण विशेषता हैं। घराना का शाब्दिक अर्थ है "परिवार" या "वंश"। संगीत के संदर्भ में, यह एक विशिष्ट शैली, परंपरा और शिक्षण पद्धति को संदर्भित करता है जो एक गुरु या गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से पीढ़ियों तक विकसित और संरक्षित की जाती है।

घराने क्या हैं?

घराने एक तरह से संगीत की विभिन्न "शैलियाँ" या "स्कूल" हैं जो एक ही मूल शास्त्रीय रागों और तालों पर आधारित होते हुए भी उन्हें प्रस्तुत करने के अपने अनूठे तरीके विकसित करते हैं। ये तरीके गायन की बारीकियों, राग के विस्तार, अलंकरणों के प्रयोग, बंदिश की प्रस्तुति और सांस लेने की तकनीक में भिन्न होते हैं।

प्रत्येक घराने का अपना एक संस्थापक गुरु होता है, जिसने अपनी विशेष शैली को विकसित किया। यह शैली फिर उनके शिष्यों और परिवार के सदस्यों के माध्यम से आगे बढ़ती रही। घरानों का विकास मुख्य रूप से 18वीं और 19वीं शताब्दी में हुआ, जब राजघरानों और धनी संरक्षकों ने संगीतकारों को आश्रय दिया, जिससे उन्हें अपनी कला को विकसित करने और उसे विशिष्ट पहचान देने का अवसर मिला।

प्रमुख गायन घराने (Major Gayaki Gharanas)

भारतीय शास्त्रीय गायन के कई प्रमुख घराने हैं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी विशिष्ट पहचान है:

1. ग्वालियर घराना (Gwalior Gharana)

- सबसे प्राचीन: इसे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सबसे प्राचीन और मूल घरानों में से एक माना जाता है।
- विशेषता: इस घराने की गायकी में खुली और दमदार आवाज़ (खुली आवाज़ का गाना), स्पष्ट और सीधे स्वरों का प्रयोग, मध्य लय में सीधी और स्पष्ट तानें, और राग के स्वरूप पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसमें बंदिश (रचना) को स्पष्टता से प्रस्तुत किया जाता है।
- प्रसिद्ध कलाकार: बालकृष्णबुवा इचलकरंजीकर, विष्णु दिगंबर पलुस्कर, ओंकारनाथ ठाकुर, कुमार गंधर्व।

2. आगरा घराना (Agra Gharana)

- विशेषता: इस घराने की गायकी में नोम-तोम का आलाप (लयबद्ध आलाप), लयकारी पर विशेष जोर, और पखावज के बोलों जैसी धमार गायकी का प्रभाव होता है। इसमें खुली और जोरदार आवाज़ का प्रयोग होता है और ध्रुपद-धमार शैली का गहरा प्रभाव दिखता है।
- प्रसिद्ध कलाकार: फ़ैयाज़ खान, विलायत हुसैन खान, लताफत हुसैन खान।

3. किराना घराना (Kirana Gharana)

- विशेषता: यह घराना स्वर की शुद्धता और मधुरता पर सबसे अधिक जोर देता है। इसमें मींड (एक स्वर से दूसरे स्वर तक सहज खिसकना) और कण (बहुत हल्के से स्पर्श किए गए स्वर) का सुंदर प्रयोग होता है। राग के एक-एक स्वर पर लंबे समय तक ठहर कर उसकी सूक्ष्मता को दर्शाया जाता है। विलंबित लय में गायन इसका महत्वपूर्ण पहलू है।
- प्रसिद्ध कलाकार: अब्दुल करीम खान (संस्थापक), सवाई गंधर्व, गंगूबाई हंगल, भीमसेन जोशी, प्रभा अत्रे।

4. जयपुर-अतरौली घराना (Jaipur-Atrauli Gharana)

- विशेषता: इस घराने की गायकी अनोखी और जटिल रागों (जैसे मालकौंस, ललिता गौरी), वक्र तानों (घुमावदार तानें) और जोड़-तोड़ के स्वरों के प्रयोग के लिए जानी जाती है। यह बंदिश की जटिल संरचना और तानों के घुमावदार पैटर्न पर ध्यान केंद्रित करता है।
- प्रसिद्ध कलाकार: अल्लादिया खान (संस्थापक), केसरी बाई केरकर, मोगूबाई कुर्डीकर, किशोरी अमोनकर।

5. पटियाला घराना (Patiala Gharana)

- विशेषता: यह घराना गायन की स्वतंत्रता, चपल तानें (तेज और फुर्तीली तानें), सरगम (स्वरों के नाम से गाना) का कलात्मक प्रयोग, और गमक (जोरदार कंपन) के लिए जाना जाता है। इसमें ठुमरी और ग़ज़ल का भी प्रभाव देखने को मिलता है।
- प्रसिद्ध कलाकार: बड़े गुलाम अली खान, फ़तेह अली खान, कौसर अली खान, परवीन सुल्ताना।

6. रामपुर-सहसवान घराना (Rampur-Sahaswan Gharana)

- विशेषता: यह घराना खुली और शक्तिशाली आवाज़, लयकारी की विविधता, और ध्रुपद-धमार की परंपरा से प्रभावित ख्याल गायकी के लिए जाना जाता है। इसमें आलापचारी पर भी जोर दिया जाता है।
- प्रसिद्ध कलाकार: उस्ताद मुश्ताक हुसैन खान, उस्ताद निसार हुसैन खान, राशिद खान।

घरानों का महत्व

भारतीय शास्त्रीय संगीत में **घरानों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान** है। ये घराने न केवल संगीत की परंपराओं को जीवित रखते हैं, बल्कि **गायकी, वादन और नृत्य की विशिष्ट शैलियों** को विकसित और संरक्षित भी करते हैं।

घरानों का महत्व:

1. संगीत की विविधता को बनाए रखना

हर घराना अपनी विशिष्ट शैली, रागों की प्रस्तुति, ताल प्रयोग, और गायन/वादन की तकनीकों के लिए जाना जाता है। इससे संगीत में एकरूपता नहीं, बल्कि **सृजनात्मक विविधता** बनी रहती है।

2. परंपरा और उत्तराधिकार की रक्षा

घराने गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित होते हैं, जिससे **मूल संगीत ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी** संरक्षित रहता है और उसमें सुधार भी होता है।

3. रचनात्मक प्रयोग की स्वतंत्रता

हर घराने में कलाकारों को अपने ढंग से राग की व्याख्या और आलाप, तान, मींड़ आदि का प्रयोग करने की स्वतंत्रता होती है। इससे संगीत अधिक **व्यक्तिगत और आत्मिक** बनता है।

4. संगीत साधना में अनुशासन

घरानों की परंपरा में सीखना एक विशेष अनुशासन और तपस्या की मांग करता है। यह कलाकार के व्यक्तित्व और **संगीत साधना को गहराई** देता है।

5. शैलीगत विशिष्टता (Stylistic Identity)

प्रत्येक घराने की एक अलग पहचान होती है। जैसे:

- **ग्वालियर घराना** – स्पष्ट उच्चारण, सरलता
- **किराना घराना** – स्वर की शुद्धता, विस्तार
- **जयपुर-अतरौली घराना** – जटिल रागों की बारीक प्रस्तुति
- **पटियाला घराना** – तानों की विविधता और दमदार गायकी

6. संगीत अनुसंधान और अध्ययन में सहायक

घरानों का अध्ययन संगीत के इतिहास, विकास और विभिन्न प्रयोगों को समझने में मदद करता है। यह संगीत प्रेमियों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों के लिए **ज्ञान का खजाना** है।

निष्कर्ष:

घराने केवल एक शैली नहीं, बल्कि एक जीवित परंपरा हैं जो संगीत को सांस्कृतिक, भावनात्मक और तकनीकी रूप से समृद्ध बनाते हैं। वे भारतीय शास्त्रीय संगीत को एक गहन, जीवंत और बहुआयामी अनुभव बनाते हैं।

"रत्नाकर के 10 विधि राग वर्गीकरण"

रत्नाकर (Sangeet Ratnakar), जो की 13वीं शताब्दी में पंडित शारंगदेव द्वारा रचित एक प्रमुख संगीत ग्रंथ है, उसमें रागों के वर्गीकरण की एक विशिष्ट पद्धति बताई गई है जिसे "दशविध राग वर्गीकरण" या "रत्नाकर के 10 विधि राग वर्गीकरण" कहा जाता है।

यह वर्गीकरण 10 आधारों पर रागों को विभाजित करता है:

रत्नाकर के अनुसार राग वर्गीकरण की 10 विधियाँ:

1. **जाति के आधार पर (Jati)**

- ऊरु (उत्तम), मध्यम, लघु
- उदाहरण: औढ़व, षाडव, संपूर्ण आदि

2. **वर्ण के आधार पर (Varna)**

- रागों में प्रयोग होने वाले चार वर्ण: आरोही, अवरोही, स्थायी, संचारी

3. **आलाप के आधार पर (Alap)**

- राग का विस्तार किस प्रकार किया जाता है – उसके आधार पर

4. **स्थान के आधार पर (Sthana)**

- स्वर कहाँ से लिए जा रहे हैं – मन्द्र, मध्य, तार सप्तक से

5. **काल के आधार पर (Kala)**

- दिन के किस समय कौन-सा राग गाया जाना चाहिए

6. **रागांग के आधार पर (Ragang)**

- मूल राग से उपजा हुआ, या उस राग के अंगों को शामिल करने वाला

7. **देश के आधार पर (Desh)**

- विभिन्न क्षेत्रों के अनुसार रागों की शैली में भिन्नता

8. **प्रयोग के आधार पर (Prayog)**

- रागों का प्रयोग किस प्रकार से किया जाता है (गीत, नृत्य आदि में)

9. **रस के आधार पर (Rasa)**

- राग किस प्रकार की भावना उत्पन्न करता है – जैसे शृंगार, करुण, वीर आदि

10. **नायक-नायिका भेद के आधार पर (Nayak-Nayika Bhed)**

- रागों को नायक-नायिका की दशाओं के अनुसार बांटा गया है

भारतीय शास्त्रीय संगीत में **स्वर-लिपि (Notation)** का उपयोग राग और ताल की संरचना को लिखित रूप देने के लिए किया जाता है। यह प्रणाली संगीत को पढ़ने, समझने और सिखाने में बहुत सहायक होती है। आइए विस्तार से देखें:

1. राग में स्वर लिपि (Notation in Raag)

स्वरों का संकेत (Swar Symbols):

स्वर	संकेत	उच्चारण	स्वर प्रकृति
सा	S	Sa	शुद्ध (शुद्ध स्वर)
रे	R	Re	शुद्ध / कोमल
ग	G	Ga	शुद्ध / कोमल
म	M	Ma	शुद्ध / तीव्र
प	P	Pa	शुद्ध
ध	D	Dha	शुद्ध / कोमल
नि	N	Ni	शुद्ध / कोमल

कोमल स्वरों को आमतौर पर छोटे अक्षरों में लिखा जाता है (जैसे r, g, d, n)
तीव्र म को 'M' या 'Ma+' से दर्शाया जाता है

? 2. ताल में स्वर लिपि (Notation in Taal)

ताल के घटक:

नाम	अर्थ
मात्रा	ताल की एक इकाई
विभाग	ताल के हिस्से
ताली	हर ताल में हाथ की तालियाँ

नाम	अर्थ
खाली	ताली के स्थान पर खाली हाथ (Wave)

बोल (Syllables of Taal):

हर ताल के कुछ विशिष्ट "बोल" होते हैं – जैसे:

उदाहरण: तीनताल (16 मात्रा)

ताल संरचना (बोल):

| धा | धिन | धिन | धा |

| धा | धिन | धिन | धा |

| ना | तिन | तिन | ना |

| धा | तिन | तिन | ता |

ताली/खाली:

- 1st, 5th, 13th मात्रा पर **ताली**
- 9th मात्रा पर **खाली**

Notation में ऐसे लिखा जाता है:

1 (ता) – धा धिन धिन धा

2 (ता) – धा धिन धिन धा

3 (खा) – ना तिन तिन ना

4 (ता) – धा तिन तिन ता

स्वर लिपि का महत्व:

- संगीत को **स्मृति से परे संरक्षित** करता है
- विद्यार्थी और शिक्षक के बीच सटीकता लाता है
- रचनाओं को प्रलेखित (Documented) करने में मदद करता है
- रचनात्मकता और अभ्यास को दिशा देता है

राग और भजन में अंतर

विशेषता	**राग**	**भजन**
परिभाषा	संगीत की वह संरचना जिसमें स्वर, ताल, और नियम होते हैं, जो भाव पैदा करते हैं।	भक्तिमय गीत जो ईश्वर की स्तुति, भक्ति या आराधना के लिए होता है।
उद्देश्य	संगीत का सौंदर्य और भावनात्मक अनुभव पैदा करना।	भक्ति भाव प्रकट करना और ईश्वर की महिमा का गायन।
शैली	शास्त्रीय संगीत की शैली, जटिल नियमों के साथ।	सरल और सहज शैली, जिसे आम जनता भी आसानी से समझ सके।
रचना	स्वरों और तालों की विशेष संरचना, आलाप, तान आदि शामिल।	भक्ति भाव के अनुसार शब्दों और संगीत की रचना।
प्रस्तुति स्थान	संगीत समारोह, कंसर्ट, शास्त्रीय मंच।	मंदिर, भक्तिमंडली, सामाजिक/धार्मिक आयोजनों में।
सामग्री	मुख्य रूप से स्वर, ताल, और राग के नियम।	धार्मिक या आध्यात्मिक विषय, ईश्वर की महिमा या कहानी।
स्वरूप	शुद्ध संगीत रचना, जिसमें भावनाओं की विविधता होती है।	गीतात्मक, सरल और आमतौर पर दोहा, चौपाई या भजन छंदों में।

सरल शब्दों में:

- **राग** = संगीत का आधार, जिसमें स्वर और ताल की शास्त्रीय व्यवस्था होती है।
- **भजन** = ईश्वर की भक्ति में गाया जाने वाला गीत, जिसमें राग और ताल की सीमित या सरलता से उपयोग होती है।

राग से आशय (राग का अर्थ या मतलब) समझना हो तो इसे ऐसे समझ सकते हैं:

राग से आशय (Meaning of Raag)

1. राग क्या है?

राग भारतीय शास्त्रीय संगीत की वह संगीत संरचना है जो स्वरों (संगीत के नोट्स) के एक निश्चित क्रम और नियमों के अनुसार गढ़ी जाती है। राग का मकसद होता है विशिष्ट भाव या मनोभाव (भावना) उत्पन्न करना।

2. राग का उद्देश्य:

राग के माध्यम से संगीतकार किसी खास भावना, मूड, या दृश्य को व्यक्त करता है। जैसे:

- शृंगार (प्रेम, सौंदर्य)
- करुण (दुख, पीड़ा)
- वीर (शौर्य, उत्साह)
- शांत (शांति, समर्पण)

3. राग के तत्व:

- स्वर (Notes): जैसे सा, रे, ग, म, प, ध, नि
- आरोह-अवरोह: राग का आरोही और अवरोही क्रम
- विशिष्ट स्वर-संयोजन: कौन से स्वर प्रमुख हैं (विस्तार, मिश्रण)
- काल: दिन के किस समय राग गाना उचित होता है।

4. राग का अर्थ (आशय):

राग का आशय है वह संगीतीय भाषा जो मन और आत्मा को छूती है, जिससे श्रोता के हृदय में एक विशेष भावना जागृत होती है। यह संगीत की वह साधना है जो श्रोता को भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करती है।

संक्षेप में:

राग = स्वर और नियमों की वह व्यवस्था, जिससे संगीतकार **भावनाओं का रंग** प्रस्तुत करता है।

सारांश :-

राग शब्द हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में सबसे महत्वपूर्ण है। गायकी में प्राचीन काल से किए गए विभिन्न कलात्मक प्रयोग राग में निबद्ध हैं। विभिन्न कालों में गायकी के स्वरूप के आधार पर सिद्धांत बदलते रहे, जैसे— ग्राम से जाति, जाति से राग। इन्हीं स्वर समूहों को अलग-अलग तरीकों से गाया-बजाया गया। इसके कारण स्वर ग्राम, मूर्छना पद्धति, राग-रागिनी पद्धति, थाट पद्धति आदि प्रचलन में रहे। सातवीं शताब्दी से सभी संगीतज्ञों ने राग शब्द का व्यवहार किया और गायन के विभिन्न तत्वों को संजोकर गायन शैलियों का विकास किया।